जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

जालोर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

जालोर, सोमवार 20 अक्टूबर, 2025

यह विज्ञापन नहीं, अवसर है

घर बदलकर कोठी लेने का

कोठी सिर्फ ₹4700/-Sq Ft | फ्लैट सिर्फ ₹4000/-Sq Ft

पजेशन पर ₹10 लाख प्राइस बढ़ेगी !

71 दिनों में हैंडओवर शुरू

KEDIA सेजस्थान
KOTHI & WALK-UP APARTMENT

अजमेर रोड़, जयपुर

FIXED PRICE GUARANTEED

बड़ी-बड़ी कोठी, बड़े-बड़े फ्लैट

NO MIDDLE-MEN

FIXED PRICE & RENTAL

PRODUCT TYPE	UNIT TYPE	SIZE	FIXED PRICE	PROPOSED RENTAL (AFTER POSSESSION)
WALK-UP APARTMENT	2 BHK (GF)	1350 Sq Ft	65 LACS	22,000
	3 BHK (SF)	1900 Sq Ft	75 LACS	25,000
	3 BHK (FF)	1900 Sq Ft	80 LACS	28,000
KOTHI	3 BHK BIG	2000 Sq Ft	1.05 CRORE	30,000
	4 BHK BIGGER	2325 Sq Ft	1.10 CRORE	40,000
	4 BHK BIGGEST	3200 Sq Ft	1.50 CRORE	50,000

SCAN QR FOR
- LOCATION
- ROUTE MAP
- SITE 360 TOUR
- E-BROCHURE
- WALKTHROUGH

info@kedia.com
www.kedia.com
www.rera.rajasthan.gov.in
RERA No. RAJ/P/2023/2387

T&C Apply.

घर के लिए:
1800 120 2323

घर का खाना बदलकर पवित्र लेने का

अशुद्ध के विरुद्ध

KEDIA™
Pavitra

आटा । सूजी । दलिया । बेसन । गेहूँ
खड़े मसाले । कुकिंग ऑयल । दाल । चावल
ड्राई फ्रूट्स । चाय इत्यादि

ORDER ON WEBSITE | ORDER ON APP | ORDER ON WHATSAPP

T&C Apply.

घर की ग्रोसरी के लिए:
1800 120 2727

विचार बिन्दु

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा कोई मित्र नहीं। यही हमारी उन्नति में सबसे बड़ा सहायक होता है। – स्वामी विवेकानंद

बधाई, शुभ कामनाएं, आभार और अभिवादन!

आज हमारा सबसे बड़ा पर्व है और मेरा यह सौभाग्य है कि आज अपने संपादकीय आलेख के माध्यम से आप सबको इस आलोक पर्व की शुभ कामनाएं समर्पित कर रहा हूं। बृहदारण्य कोपनिषद् में कितनी सुंदर बात कही गई है:–**असतोमासद्गमय। तमसोमाज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतंगमय ॥** अर्थात 'मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो'। हम सब प्रकाश की तरफ कदम बढ़ाएं और हमारा जीवन सदा आलोकित रहे – इस पर्व पर यही मंगल कामना है!

यह संपादकीय एक और कारण से मेरे लिए बहुत ख़ास है।

राष्ट्रदूत में मेरा यह 500वां संपादकीय है। 24 सितंबर, 2015 को राष्ट्रदूत में मेरा पहला अतिथि संपादकीय छपा था। तब सोचा ही नहीं था कि यह यात्रा इस मुकाम तक आ पहुंचेगी। इस बीच एक भी सोमवार ऐसा नहीं बीता जब अख़बार में इस जगह मेरा संपादकीय न छपा हो। हां, त्यौहार आदि की वजह से अगर किसी सोमवार अख़बार ही नहीं छपा तो बात अलग है। वैसे ऐसा बहुत ही कम हुआ है। मेरा संपादकीय आलेख 'राष्ट्रदूत' के सारे संस्करणों में छपा इसलिए, और इसलिए भी कि यहां प्रकाशित होने के बाद मैं इसे विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी साझा करता रहा हूं, मुझे खूब पाठक मिले हैं। इधर मैं उन दोस्तों के लिए, जिन्हें लम्बे आलेख पढ़ने में असुविधा होती है, अपने संपादकीय की ऑडियो फ़ाइल्स भी भेज देता हूं, और मेरे बहुत सारे मित्र मेरा लिखा पढ़ने की बजाय मेरा लिखा सुनने में अधिक आसानी अनुभव करते हैं। आज यह अवसर है कि मैं अपने सारे आदरणीय पाठकों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करूं। लगभग दस साल की इस दीर्घ अवधि में अपने पाठकों से मेरा ऐसा रिश्ता बन गया है जो दो तरफ़ा है। वे मुझे अपनी बात कहते हैं, सुझाव देते हैं और कभी-कभार असहमत भी होते हैं। उनकी बात मुझे अपने लिखे को और बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होती है। बहुत-बहुत आभार मेरे प्रिय पाठकों।

जितना आभार मैं अपने पाठकों का मानता हूं उतना ही आभार मेरे मन में पूरे राष्ट्रदूत परिवार के लिए भी है। इधर इस बात की बहुत चर्चा होती है, और मैं भी ऐसी चर्चाएं अनेक बार कर चुका हूं कि हमारे यहां अभिव्यक्ति की आज़ादी सिकुड़ती जा रही है। लेकिन जहां तक राष्ट्रदूत का सवाल है, उसे मैं इस आलोचना से बाहर रखता हूं। यह बात ख़ुद मेरे लिए भी अत्यधिक आश्चर्यजनक है कि इन दस वर्षों में, और कुल 499 संपादकीयों में एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि 'राष्ट्रदूत' की तरफ से मुझे कहा गया हो कि यह न लिखा जाए, या उन्होंने मेरे लिखे में कुछ बदला हो। मेरा हर संपादकीय लगभग एक हज़ार चार सौ शब्दों का होता है। इस तरह इन दस वर्षों में राष्ट्रदूत ने मेरे लिखे लगभग सात लाख शब्द, बिना एक भी शब्द को बदले प्रकाशित किए हैं। अभिव्यक्ति की इससे बड़ी आज़ादी और क्या हो सकती है? इस वैचारिक उदारता के लिए 'राष्ट्रदूत' का अभिवादन और अभिनंदन!

मैंने बहुत बार सोचा है और बहुत बार मेरे शुभ चिंतकों ने भी मुझे इस बारे में सोचने को प्रेरित किया है। मूलत: मैं साहित्य की दुनिया का प्राणी हूं। ये संपादकीय लिखना शुरु करने से पहले भी साहित्य की दुनिया में मेरी थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा थी। अब लोग मुझे एक स्तंभकार के रूप में अधिक जानने लगे हैं। ख़ुद मेरा भी बहुत सारा समय इन संपादकीयों को लिखने में जाता है। स्वभावत: इससे मेरा साहित्यिक रचना कर्म प्रतिकूलत: प्रभावित हुआ है। मैंने बार-बार सोचा है कि क्या मुझे अपने इस वैचारिक लेखन को छोड़ कर या कम करके फिर से अपनी साहित्य की दुनिया में अधिक सक्रिय होना चाहिए! मेरे बहुत सारे शुभ चिंतक ऐसा ही चाहते हैं। मैं इस मुद्दे पर बार-बार सोचता रहा हूं और अब यह मानने लगा हूं कि देश और दुनिया की वर्तमान स्थितियों में एक नागरिक के रूप में मुझे अपना दायित्व निबाहने के लिए इस तरह का लेखन करते रहना चाहिए।

नई तकनीक के प्रसार की वजह से आप बड़े से बड़े कलाकार को लगभग निःशुल्क देख-सुन सकते हैं, उसकी कला के बारे में अपनी जानकारी और समझ को बढ़ा सकते हैं। आप घर बैठे, और बिना कुछ खर्च किए और बिना कहीं गए दुनिया के बड़े से बड़े संग्रहालय की सैर कर सकते हैं और उसकी कलाकृतियों का अवलोकन कर सकते हैं। तकनीक के ये बेशकीमती उपहार हममें से हरेक को सुलभ हैं, लेकिन यह जानना बहुत कष्टदायक है कि हममें से अधिकांश न केवल इनका ठीक-ठाक उपयोग नहीं करते हैं, हममें से बहुत सारे लोग तो इनके अस्तित्व से ही अनजान हैं! कैसी त्रासदी है कि हमारे चारों तरफ बेशकीमती खज़ाना बिखरा पड़ा है और हमें यह बात मालूम ही नहीं है।

आज की दुनिया बहुत ज़्यादा बदल चुकी है। बहुत सारे अच्छे बदलाव हुए हैं तो बहुत सारे बदलाव ऐसे भी हुए हैं जो न होते तो ज़्यादा अच्छा होता। लेकिन सब कुछ अपने चाहने से तो होता नहीं है। यह भी कि जो बदलाव मुझे अप्रिय लगते हैं वे बहुतों को सराहनीय भी लगते हैं। सोच का अंतर अस्वाभाविक नहीं है। ऐसे में संवाद की, अपनी बात कहने के मंच की, अपनी बात कहने की आज़ादी की, और अपनी बात कहने के कौशल की अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है। मुझे लगता है कि जितना इस दुनिया को मैंने देखा, जाना और समझा है, जो थोड़ा बहुत पढ़ा है, अच्छे और ज्ञानवान लोगों की सोहबत से जो सीखा है – इन सबके कारण मेरा यह हक़ बनता है कि मैं अपनी बात कहूं। कोई ज़रूरी नहीं है कि मेरे लिखे को पढ़ने वाला हर पाठक मेरी बात से सहमत हो। जितनी महत्ता सहमति की है उससे कम महत्ता असहमति की नहीं है। अपने पहले के लिखे संपादकीयों को पढ़ते हुए बहुत बार मैंने महसूस किया है कि कुछ बरस पहले बहुत सारी चीज़ों के प्रति मेरा जो नज़रिया था वह अब बदल गया है। अपने नज़रिये में बदलाव की बात को स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है। अपने बहुत लोकप्रिय एक गीत जीवन की आपाधापी में हरिवंश राय बच्चन ने क्या खूब लिखा है:–मैं जहां खडा था कल, उस थल पर आज नहीं/ कल इसी जगह पर पाना मुझको मुश्किल है।असल में बदलाव जीवन का बड़ा यथार्थ है। सब कुछ बदलता है– और इस सब कुछ में हमारे विचार भी शामिल हैं।

साहित्य, कला, संस्कृति – ये सब जीवन के लिए बहुत ज़रूरी हैं। इनसे हमारी रुचि का ही परिष्कार नहीं होता है, हमारी संवेदना को भी बल मिलता है। हम बेहतर मनुष्य बनते हैं। यह देखना बहुत सुखद है कि नई तकनीक ने कला-संस्कृति केबहुत सारे उपादानों को अब बहुत अधिक सुलभ बना दिया है। भले ही शहरों में किताबों की दुकानें कम हों, ई कॉमर्स के ठिकानों की वजह से किताबें खरीदना आज अधिक सुगम हुआ है। जो किसी भी कारण से किताब खरीद पाने में दिक्कत महसूस करते हैं उनके लिए भी तकनीक ने ऐसे बहुत सारे साधन सुलभ करा दिए हैं जिनका उपयोग कर वे किताबों की दुनिया की सैर कर सकते हैं। भले ही यह नैतिक न हो, दुनिया भर की किताबें और पत्र-पत्रिकाएं आपको पीडीएफ फॉर्मेट में मुफ़्त में मिल जाती हैं। नई तकनीक के प्रसार की वजह से आप बड़े से बड़े कलाकार को लगभग नि:शुल्क देख-सुन सकते हैं, उसकी कला के बारे में अपनी जानकारी और समझ को बढ़ा सकते हैं। आप घर बैठे, और बिना कुछ खर्च किए और बिना कहीं गए दुनिया के बड़े से बड़े संग्रहालय की सैर कर सकते हैं और उसकी कलाकृतियों का अवलोकन कर सकते हैं। तकनीक के ये बेशकीमती उपहार हममें से हरेक को सुलभ हैं, लेकिन यह जानना बहुत कष्टदायक है कि हममें से अधिकांश न केवल इनका ठीक-ठाक उपयोग नहीं करते हैं, हममें से बहुत सारे लोग तो इनके अस्तित्व से ही अनजान हैं! कैसी त्रासदी है कि हमारे चारों तरफ बेशकीमती खज़ाना बिखरा पड़ा है और हमें यह बात मालूम ही नहीं है। शायद ऐसी ही किसी मन:स्थिति में तुलसीदास जी ने कहा होगा किसकल पदारथएहि जग मांही, करमहीन नर पावत नाहीं।

यह भी मैं अपना दायित्व समझता हूं कि समय-समय पर अपने पाठकों से कला-साहित्य-संस्कृति के मुद्दों पर बात करूं! आखिर मैंने भी तो किसी से सीखा ही है। अब भी सीखता हूं। जो मैंने जाना और सीखा है उसे आगे बढ़ाना मेरा कर्तव्य है और इस कर्तव्य का निर्वहन मैं निस्संकोच भाव से करता हूं। मेरा स्पष्ट मत है कि संवाद का माहौल बना रहना चाहिए। सहमति असहमति उसके बाद की बात है। मेरे ये लेख संवाद के सिलसिले को बनाए रखने का ही उपक्रम हैं और मुझे खुशी है कि इस उपक्रम में आप सब मेरे सहयोगी और सहयात्री हैं।

आप सबके प्रति एक बार फिर हार्दिक कृतज्ञता, सादर अभिवादन, और दीपावली की हार्दिक शुभ कामनाएं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अमेरिकन दबाव से सफ़ेद सोना उत्पादक किसानों के आये काले दिन

रामपाल जाट

अमेरिका ने भारतीय कपड़ा उत्पादों पर 50% शुल्क आरोपित किया है। भारत की ओर से यह निर्यात 48 करोड़ डॉलर का है, जो कुल कपड़ा निर्यात का 6% एवं औद्योगिक जगत के कुल मूल्य का 1.5% से कम है। दूसरी ओर अमेरिका द्वारा भारत में आयात होने वाले कपास पर भारत सरकार द्वारा 11% आयात शुल्क को 19 अगस्त से 30 सितंबर तक की अवधि के लिए हटा दिया, अब इस आयात शुल्क की छूट अवधि 31 दिसंबर तक बढ़ा दी गई है।

कपास को सफेद सोना कहा जाता है, इसलिए ब्रिटिश काल में इसके लिए कृषि उत्पाद बाजार समिति का निर्माण किया गया था। अब महाराष्ट्र सरकार द्वारा गठित की गई विशेष जांच समिति द्वारा इसी कपास को 'हत्यारी कपास' के नाम से संबोधित किया गया। कपास का उत्पादन 60 लाख किसान परिवारों की आजीविका का आधार है। प्रसंस्करण, व्यापार एवं वस्त्र उद्योग से सम्बंधित कार्यों में अप्रत्यक्ष रूप से 4 करोड़ जनता की आजीविका का आधार है। कपास भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। स्वतंत्रता संग्राम में भी कपास महत्वपूर्ण प्रतीक था। उस समय सूत कातने के लिए चरखा संग्राम का आधार बना था। जब विश्व के अनेक देशों में तन ढकने के लिए पेड़ों की छाल एवं पत्तों का उपयोग किया जाता था, तब भारत में ग्राम स्तर पर कपास का उत्पादन होता था। जिससे अनेक प्रकार के परिधान तैयार होते थे। उस समय विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी सर्वाधिक थी।

भारत के कपड़े से बनी हुई चुन्नी इंग्लैंड की महिलाओं में आकर्षण का केंद्र थी। तब भारत का कपड़ा सोने के भाव बिकता था। उस समय इंग्लैंड को में भारत के कपड़े को रोकने के लिए स्वदेशी आंदोलन चलाना पड़ा तथा चुन्नी खरीदने वाली महिलाओं को रोकने के लिए एक पाउंड के अर्थ दंड का प्रावधान करना पड़ा। मानव के लिए रोटी, कपड़ा और मकान अनिवार्य आवश्यकता है। इसलिए कपड़ा सहज रूप से स्वीकार्य और 'स्वदेशी अपनाओ' के अंतर्गत विदेशी कपड़ों की 'होली जलाना' लोकप्रिय आंदोलन बन गया था। सरकारी नीतियों के कारण से महाराष्ट्र का मराठवाडा एवं विदर्भ क्षेत्र कपास उत्पादकों में आत्महत्या की पहचान बन गया। भारत के किसानों को कृषि उत्पादों के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति से प्रतियोगिता करनी पड़ती है। यह बराबरी की प्रतियोगिता नहीं है, क्योंकि प्रतियोगिता बराबरी वालों में ही होती है। भारत के किसानों के साथ सरकार खड़ी दिखाई नहीं देती वरन किसानों को कंपनियों के भरोसे लुटने के लिए छोड़ रखा है। राजनीतिक दल एवं नेता मतदाता के साथ नहीं वरन चंदादाता के साथ खड़े दिखाई देते हैं।

भारत में कपास उत्पादन का क्षेत्र वर्ष 2013-14 से लेकर 2024-25 तक 10.83 से लेकर 13.48 मिलियन हेक्टेयर रहा है। इसी अवधि में कपास का उत्पादन 29.40 से लेकर 36.07 मिलियन टन रहा है। उत्पादकता 378 से लेकर 512 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रही है। कपास उत्पादन में गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना, राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, ओड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु जैसे राज्य अग्रणी भूमिका में है। देश में कपास उत्पादन से कोई भी राज्य अछूता नहीं है। इसके उपरांत भी किसानों को उत्पादन लागत प्राप्त नहीं हो पाती है। यथा – वर्ष 2024-25 में कपास की सी-2 संपूर्ण लागत 6717 रूपये प्रति क्विंटल थी किंतु किसानों को एक क्विंटल कपास के दाम 5500 से लेकर 6500 रूपये ही प्राप्त हुए।

2024-25 में घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य मध्यम रेशे का 7121 रूपये, लंबे रेशे का 7521 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया। संपूर्ण लागत सी-2 के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य 10,075.50 रूपये प्रति क्विंटल होना चाहिए था। इसके अनुसार घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से क्रमश: 2954.50 से लेकर 2554.50 रुपए कम निर्धारित किया गया।

भारत सरकार की 8 अप्रेल 2025 की समाचार विज्ञिप्त के अनुसार 31 मार्च 2025 तक कपास 525 लाख क्विंटल न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भारतीय कपास निगम द्वारा क्रय किया गया जो था, जो कुल आवक की 38% कपास थी। भारत सरकार द्वारा बजट वर्ष 2018-19 में लागत पर 50% से अधिक लाभांश देने का संकल्प व्यक्त किया गया था। उस संकल्प के अनुसार सम्पूर्ण लागत (सी- 2) पर 50% लाभांश जोड़ा जाता तो किसानो को एक क्विंटल कपास पर 2954.50 रुपए अधिक प्राप्त होते। यानि इस संकल्प के आधार पर गणना नहीं करने के कारण किसानो को 15511.13 करोड़ रुपए का घाटा उठाना पड़ा। शेष 62ऱ्ह कपास 856.58 लाख क्विंटल को तो घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य भी प्राप्त नहीं हुआ बल्कि किसानो को बाज़ार में एक क्विंटल कपास के दाम 5500 से लेकर 6500 रुपए प्राप्त हुए। घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी इसके मध्य बिंदु 6000 रुपए मानने पर घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी एक क्विंटल पर 1121 रुपए का घाटा हुआ। सरकार के बजटीय संकल्प के अनुसार लागत पर 50% लाभांश जोड़ने पर एक क्विंटल का घाटा 4075.50 रुपए है। खुले बाज़ार में 856.58 लाख क्विंटल विक्रय पर प्रति क्विंटल 4075.50 रुपए कम मिलने से कुल 34909.92 करोड़ का घाटा हुआ। इस वर्ष देश के किसानों को कपास के न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं खुले बाजार में विक्रय दोनों का सकल घाटा 50421.05 करोड़ रुपए हुआ।

भारत सरकार द्वारा 8 अप्रेल 2025 को प्रसारित समाचार विज्ञिप्त के अनुसार 525 लाख क्विंटल में 100 लाख गांठ होना दर्शाया है। भारतीय मानक के अनुसार एक गांठ का भार 170 किलोग्राम यानि एक क्विंटल 70 किलोग्राम होता है। मानक के अनुसार 525 लाख क्विंटल में गाठों की संख्या 308 होनी चाहिए। जबकि इस सरकारी विज्ञिप्त के अनुसार तो एक गांठ में 525 किलोग्राम की मात्रा है। इस में अनुमानित उत्पादन 294.25 गांठे दर्शाया है, भारतीय मानक 170 किलोग्राम प्रति गांठ के अनुसार कुल अनुमानित उत्पादन 500.23 लाख क्विंटल (5.0023 मिलियन टन) होता है। केंद्र सरकार की अधिकृत विज्ञिप्त में ऐसी त्रुटि सरकारी आंकड़ों की विश्वसनीयता पर ही प्रश्न चिन्ह लगाती है। इसका सत्यापन कर सार्वजनिक रूप से स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

वर्ष 2025-26 में मध्यम रेशे की कपास का ए 2ह्र एफ एल के सूत्र के आधार पर न्यूनतम समर्थन मूल्य 7710 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया है, जो सी -2 संपूर्ण लागत के अनुसार 10075.50 रुपए होना चाहिए। इस सूत्र के अनुसार प्रति क्विंटल पर 2365.50 का घाटा संभावित है। सरकार के द्वितीय आकलन के अनुसार वर्ष 2024-25 का अनुमानित उत्पादन 29.4 मिलियन टन है, उसका 6954.57 करोड़ रुपए तो न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण में ही कम कर दिया है।

भारत में कपास दीपावली के आस-पास तैयार होगी और देश के वस्त्र-उद्योगपतियों ने अमेरिकन कपास आयात करने के आदेश दे दिए हैं, जो भारत की कपास तैयार होने के पूर्व प्राप्त हो जाएगी। परिणामत:: भारत के कपास उत्पादकों को अपनी कपास ओने-पौने दामों में बेचने के लिए विवश होना पड़ेगा।

कपास के उत्पादन में से 60% मात्र बिनोले की होती है, जो पशु आहार के रूप में उपयोग में आता है। इससे पशुओं के दूध में बढ़ोतरी हो जाती है किंतु यहां भी किसान का घाटा बढ़ रहा है। क्योंकि जीएम बीटी कपास के बिनोले में विष की मात्रा होने से दूध में भी विष आ रहा है। इसलिए यह बिनोला भी उपयोग के योग्य नहीं रहा है। इससे कंगाली में आटा गीला की कहावत चरितार्थ हो रही है।

सरकार ने 11% आयात शुल्क को शून्य करने का कारण वस्त्र उद्योगपतियों को लाभ देना प्रकट किया है। इससे स्पष्ट है कि सरकार कपास उत्पादक किसानो को उद्योगपतियों के सामान महत्व नहीं देती है। सरकार की ऐसी भेदभाव पूर्ण नीतियों के कारण अमेरिकन दबाव से सफ़ेद सोना उत्पादक किसानों के काले दिन आने की संभावना बन गयी है।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष- किसान महापंचायत

1970-80 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती रही

सुनील दत्त गोयल

1991 का आर्थिक संकट भारत के लिए एक बड़ा झटका था। इस संकट के लिए कई कारण जिम्मेदार थे, जिनमें पिछली सरकारो की गलत नीतियां, संरचनात्मक कमियां और बाहरी आघात शामिल थे। इस संकट की जड़ें 1970 और 1980 के दशक में वित्त मंत्रालय और उस समय के आर्थिक सलाहकारों की नीतियों में छिपी हुई थीं। इस दौरान उनकी भूमिका और वित्त मंत्रालय की नीतियों की विफलताओं पर चर्चा की जानी चाहिए। 1991 के आर्थिक सुधारों को लेकर डॉ. मनमोहन सिंह का महिमामंडन अक्सर किया जाता है, लेकिन यह आवश्यक है कि इस पर तथ्यात्मक और निष्पक्ष विश्लेषण किया जाए।

1970-80 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती रही। उस दौर में डॉ. मनमोहन सिंह विभिन्न उच्च पदों पर रहे, जिनमें मुख्य आर्थिक सलाहकार, भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर और योजना आयोग के उपाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद शामिल थे।

इन पदों पर रहते हुए उन्होंने आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया, लेकिन उन नीतियों में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं दिखाई दिया। इसके विपरीत, भारत की आयात नीतियों और संरक्षणवादी रुख ने कई घरेलू उद्योगों को कमजोर कर दिया।

यह जानना दिलचस्प है कि आपातकाल से पहले भारत में आयकर की अधिकतम दर लगभग 22 प्रतिशत थी, जो 1973-74 में बढ़कर 97.5 प्रतिशत से भी अधिक हो गई थी। यह दर उस समय की वित्तीय नीतियों की असफलता को दर्शाती है, जिसमें डॉ. सिंह का योगदान रहा, क्योंकि वे उस समय आर्थिक नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका में थे।

पाम ऑयल आयात की अनुमति जैसे निर्णयों ने भारतीय तेल उद्योग को भारी नुकसान पहुंचाया। इसी प्रकार, अनियंत्रित आयात नीतियों के कारण 1980 से 2010 के बीच भारत में कई लघु और मध्यम उद्योग बंद हो गए। यह दौर वही था, जब डॉ. सिंह नीति-निर्धारण का हिस्सा थे। ऐसे में यह सवाल उठत

धनतेरस पर गौशाला को दिया 10 बीघा भूमि और परिस

बूंदी। धनतेरस के पावन अवसर पर दान की महत्ता को चरितार्थ करते हुए, काटी निवासी राधेश्याम यादव ने एक अनुकरणीय और ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्होंने अपनी 10 बीघा भूमि और उस पर निर्मित परिसर को केसरियाँ नाथ जोगनीय माँ गो सेवा समिति को दान कर दिया है। इसके साथ ही, उन्होंने 50 गोवंश को भी गौशालाओं को समर्पित किया है।

यादव वंश से संबंध रखने वाले राधेश्याम यादव ने गोवंश की सेवा और संरक्षण को अपने जीवन का उद्देश्य चुना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने लगभग डेढ़ करोड़ रुपये मूल्य का यह परिसर और भूमि समिति को सौंप दी। यह दान धनतेरस जैसे शुभ दिन पर किया गया, जिसने इस कार्य को और भी ऐतिहासिक बना दिया है। केसरियाँ नाथ जोगनीय माँ गो सेवा समिति से जुड़े सदस्यों ने राधेश्याम यादव के इस महान संकल्प का हृदय से स्वागत किया।

समिति के सदस्य आदित्य भंडारी, महेश कुमार जैन , डाक्टर पंकज जैन ,जैनेंद्र छाजेड, सौरभ भंडारी, शुभम जैन, सोनिल भंडारी, अंकुर शर्मा, संदीप गोलेचा और नवीन जैन ने इस अवसर पर राधेश्याम जी का अभिनंदन किया।

बीकानेर में भेड़, ऊंटनी के दूध से तैयार किया ड्रिंक

डायबिटीज और खून की कमी वाले मरीजों को फायदा

बीकानेर। राजस्थान की वेटरनरी यूनिवर्सिटी (बीकानेर) ने एक ऐसा ड्रिंक तैयार किया है, जिससे बीमारियां ठीक की जा सकेंगी। खास बात ये है कि इस ड्रिंक को गाय और बकरी के अलावा भेड़, ऊंटनी और गधी के दूध से तैयार किया गया है।

इस ड्रिंक को पेंटेंट करवाने का प्रोसेस भी किया जा रहा है। दावा किया जा रहा है कि पेटेंट के बाद जल्द ही ये स्पेशल ड्रिंक बाजार में उपलब्ध होगी। इसे तैयार करने वाले एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुकुल सैन का दावा है कि ये ड्रिंक डायबिटीज और एनीमिया जैसी बीमारियों में फायदेमंद होगी। इसकी एक खास बात ये भी है कि ये 10 दिन तक खराब भी नहीं होगी।

दरअसल, डायबिटीज, एनिमिया, कब्ज और पेट की बीमारियों समेत वे लोग जिन्हें बीमारी के दौरान मुंह से खाने में परेशानी होती है, उन्हें ध्यान में रखकर इस पर रिसर्च शुरू की गई थी। इस ड्रिंक को सांगरी, तुलसी के बीज, सहजन, मल्टीग्रेन, अलसी, अजवाइन, पुदीना, धनिया, तिल और मल्टीग्रेन भी मिलाया गया है। इसे सिन बायेटिक थेरेब्यूटिक हेल्थ ड्रिंक नाम दिया गया है। इस ड्रिंक को तैयार करने के लिए पांच जानवरों का दूध लिया गया। इसमें गाय, बकरी, भेड़, ऊंटनी और गधी का दूध था। इन सभी औषधीय प्लांट्स की बराबर मात्रा के अनुसार लिया गया। इसके बाद इन सभी का पाउडर तैयार कर इन्हें पांच अलग-अलग दूध में मिलाया गया। दो दिन तक इन मिक्सर को फर्मेंटेशन किया गया। इसके बाद इस मिक्सर को एक समान तापमान में गर्म किया गया। ध्यान रखा गया कि जिस तापमान में ये जितने समय में गर्म हुआ है उसी तापमान और समय में इसे दोबारा नॉर्मल किया जाए। दो दिन के इस पूरे प्रोसेस के बाद ये खास ड्रिंक तैयार हुआ। डॉ. मुकुल सैन ने बताया कि फर्मेंटेशन के बाद रिजल्ट अलग-अलग थे लेकिन सभी पॉजिटिव थे। सैंपल बनाने के बाद सर्वाधिक सही और औषधीय गुण वाले सैंपल को पेटेंट के लिए भेजा गया है। इसके लिए इंडियन पेटेंट ऑफिस को एप्लिकेशन दी गई। इस पर पेटेंट ऑफिस ने रिसर्च कर पता लगाया कि अब तक इस तरह का काम नहीं हुआ है। इसके बाद एप्लिकेशन को स्वीकृत कर लिया गया। अब इसका सर्टिफिकेशन होना बाकी है। पेटेंट मिलने के बाद इस फॉर्मूले को बाजार में दिया जाएगा। प्राइवेट और सरकारी फर्मों को एक एमओयू के तहत इसका लिटरेचर दिया जाएगा। डेयरी इंडस्ट्री में ये एक नया ब्रेवरेज ड्रिंक का स्थान ले सकता है। डॉ. सैन बताते हैं कि इस ड्रिंक में प्रोटीन, फाइबर, मिनरल्स, एंटी ऑक्सीडेंट, मल्टी एंजाइम होंगे। इससे ये मल्टी न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट के रूप में काम आ सकेगा। इसके लिए जिन लोगों को मुंह से खाना खाने में परेशानी हैं, उन्हें ड्रिंक के रूप में भारी भोजन दिया जा सकता है। साथ ही पेट की बीमारियों से ग्रसित रोगियों के लिए भी उपयोगी साबित हो सकता है। वेटरनरी यूनिवर्सिटी के डेयरी साइंस के प्रोफेसर राहुल सिंह पाल ने बताया कि ये रिसर्च पिछले आठ महीने से चल रहा है। इसे करीब 22 बार बनाया गया था। इसके बाद इसे स्टाफ के लोगों को पिलाया गया, जिसमें किसी भी स्तर पर नुकसान सामने नहीं आया है। इस ड्रिंक को अगर रेफ्रिजरेटर में रखा जाता है तो पांच से सात दिन तक खराब नहीं होता। वहीं, अगर इसकी पैकिंग कर दी जाए तो दस दिन तक खराब नहीं होगा। ऐसे में कहीं भी बनाकर इसे आगे एक्सपोर्ट किया जा सकता है। डॉ. मुकुल सेन वेटरनरी यूनिवर्सिटी में टीचिंग एसोसिएट के रूप में काम कर रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 20 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र रात्रि 8:17 तक, वैधृति योग रात्रि 2:35 तक, शकुनि करण दिन 3:45 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजा, महाकाली पूजा, वैधृति पुण्य, कमला जयन्ती है। दीपावली लक्ष्मी पूजन प्रदोष युक्त अमावस्या को स्थिर लग्न-स्थिर नवांश में किया जाना सर्वश्रेष्ठ है। लक्ष्मी पूजा समय प्रदोष काल सायं 5:51 से रात्रि 8:23 तक, वृष लग्न रात्रि 7:18 से 9:15 तक, सिंह लग्न मध्य रात्रि 1:48 से 4:04 तक है। पूजा का सर्वश्रेष्ठ समय 7:30 से 7:42 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 5:57 तक, शुभ 9:22 से 10:42 तक, चर 1:36 से 3:01 तक, लाभ अमृत 3:01 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 5:51

मेष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं, सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 194 प्रभात जालोर, सोमवार 20 अक्टूबर, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

लद्दाख प्रतिनिधियों की गृह मंत्रालय से 22 को वार्ता

लेह, 19 अक्टूबर। पिछले महीने हुई हिंसा के बाद, लद्दाख के प्रतिनिधि 22 अक्तूबर को दिल्ली में गृह मंत्रालय के साथ बातचीत करेंगे। इस बैठक में लेह एपेक्स बॉडी, कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस और लद्दाख के सांसद की ओर से तीन-तीन सदस्य शामिल होंगे।

ज्ञातव्य है कि लेह में बीते 24 सितंबर को राज्य का दर्जा और छठी

■ **दिल्ली में हो रही इस वार्ता में लेह एपेक्स बॉडी, कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस और लद्दाख के सांसद की ओर से तीन-तीन सदस्य शामिल होंगे।**

अनुसूची की मांग को लेकर हुए प्रदर्शन हिंसक हो गए थे, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। इसके बाद कर्फ्यू और इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई थीं, जिससे जनजीवन और व्यापार दोनों प्रभावित हुए।

जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को भी इस प्रदर्शन के बाद हिरासत में लिया गया था। एक सप्ताह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अवकाश की सूचना

दीपावली के पावन पर्व पर राष्ट्रदूत कार्यालय में 20 व 21 अक्टूबर 2025 को अवकाश रहेगा। अतः अगला अंक 23 अक्टूबर 2025 को प्रकाशित होगा।

- व्यवस्थापक

महागठबंधन बिहार की सीटों के बंटवारे में उलझा

प्रायः सभी घटक दलों के प्रत्याशी स्वतंत्र रूप से नामांकन दाखिल करने में जुटे

पटना, 19 अक्टूबर। खुद को सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को चुनौती देने वाला सबसे मज़बूत विपक्षी मोर्चा कहने वाला महागठबंधन अपने घटक दलों के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर उलझ गया है और चुनाव में प्रथम चरण में नामांकन की वापसी की अंतिम तिथि समीप आने के साथ उनका आपस में तालमेल अब "महा-विवाद" बनता जा रहा है।

महागठबंधन के घटक दल हफ़्तों से बातचीत में मशगूल हैं लेकिन 17 अक्टूबर को पहले चरण के मतदान के लिए नामांकन की समय सीमा समाप्त होने के बाद भी सीटों के बंटवारे का फ़ॉर्मूला अंतिम रूप से सामने नहीं आ पाया है। महागठबंधन के घटक, राष्ट्रीय जनता दल (राजद), कांग्रेस, वामपंथी दल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा), मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा), भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी (भाकपा-माले) और विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) सभी ने स्वतंत्र रूप से नामांकन दाखिल किए हैं।

महागठबंधन के घटक दलों में तालमेल के अभाव में "फ्रेंडली फाइट" के हालात उत्पन्न हो गए हैं, क्योंकि महा गठबंधन के उम्मीदवारों ने अपने तीर

■ **यदि महागठबंधन के घटकों में "फ्रेंडली फाइट" के हालात बने रहे तो विपक्ष के वोटों का बंटवारा हो जाएगा, जो भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के लिए लाभदायक हो सकता है।**

का तरकश एक दूसरे की तरफ तान दिया है। कहा जा रहा है कि महागठबंधन के एक से ज्यादा उम्मीदवारों का एक ही सीट पर लड़ना, वोट बंटवारे का कारण बनेगा, जिससे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राजग को करीबी मुकाबलों में निर्णायक बढ़ त मिल सकती है।

छह नवंबर को होने वाले पहले चरण के चुनाव के लिए 121 सीटों पर नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख 20 अक्टूबर है, ऐसे में महागठबंधन के नेताओं को पूरा विश्वास है कि एक ही सीट पर दो घटक दलों के उम्मीदवारों के नामांकनों का मामला सुलझ जाएगा। राजद, कांग्रेस और वीआईपी के नेताओं ने कहा कि ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों के अतिरिक्त उम्मीदवार तालमेल के बाद अपने नामांकन वापस ले लेंगे।

मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार पर आम सहमति न बनने से महागठबंधन की स्थिति और जटिल हो गई है। राजद ने कथित तौर पर तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है, जबकि कांग्रेस की ओर से कोई औपचारिक घोषणा नहीं हुई है।

इस बीच, झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ने के फैसले ने महागठबंधन को एक और झटका दिया है। झामुमो प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा कि उनकी पार्टी कुछ भी सहन कर सकती हैं, लेकिन अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं कर सकती।

चुनाव प्रक्रिया के दौरान नामांकन जांच में मिली त्रुटियों ने महागठबंधन की मुश्किलों को और बढ़ा दिया है। वीआईपी के गणेश भारती ने हस्ताक्षर न होने के कारण अपना पार्टी चिह्न खो दिया और अब वह कुशेश्वरस्थान से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ेंगे। राजग की ओर से भी मढ़ौरा से लोजपा (रामविलास) उम्मीदवार भोजपुरी फिल्म अभिनेत्री सीमा सिंह का नामांकन खारिज कर दिया गया, जिससे सत्तारूढ़ गठबंधन के पास उस सीट के लिए कोई उम्मीदवार नहीं बचा है।

पेरिस के लूव्र म्यूज़ियम से नेपोलियन काल के गहने चोरी

पेरिस, 19 अक्टूबर। फ्रांस की राजधानी पेरिस के विख्यात लूव्र म्यूज़ियम से रविवार की सुबह ऐतिहासिक और बहुमूल्य गहनों की चोरी हो गयी।

मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक तीन-चार नकाबपोश निर्माणाधीन क्षेत्र से एक

■ **सीन नदी के किनारे स्थित लूव्र म्यूज़ियम विश्व के सबसे प्रसिद्ध म्यूज़ियमों में से एक है।**

मालवाहक लिफ्ट के सहारे, म्यूज़ियम का शीशा तोड़ कर, उस कमरे में घूस गए जहाँ नेपोलियन और महारानी से संबंधित संग्रह रखे हुए थे। उस संग्रह से वे नौ गहने चुरा ले गए।

रिपोर्ट के मुताबिक सुबह 9:30 से 9:40 के बीच चोर कथित तौर पर स्कूटर पर आए और केवल सात मिनट में दिनदहाड़े इस डकैती को अंजाम देकर चले गए।

फ्रांस के गृह मंत्री लॉरेंट नुनेज़ ने कहा कि नुकसान का आकलन अभी किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि लूटेरों से संबंधित एक स्कूटर बरामद हुआ है और आगे की जांच चल रही है।

फ्रांस की संस्कृति मंत्री रचिदा दाती ने एक्स पर एक पोस्ट में सूचना दी कि रविवार को संग्रहालय बंद रहेगा, क्योंकि यहाँ सुबह चोरी हुयी है।

उल्लेखनीय है कि सीन नदी के किनारे स्थित लूव्र म्यूजियम विश्व के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अयोध्या में 26 लाख दिये जलाये, 2100 वेदाचार्यों ने आरती की

दीपोत्सव समारोह में गिनीज़ बुक ने वर्ल्ड रिकॉर्ड के दो प्रमाण पत्र दिये

अयोध्या, 19 अक्टूबर। दीपावली के मौके पर रामनगरी अयोध्या में 26,17,215 दीये जलाए गए। इसके साथ ही वर्ल्ड रिकॉर्ड बन गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में दीपोत्सव समारोह के दौरान बनाए गए दो नए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रमाण पत्र लिए। यहां एक साथ सबसे ज्यादा लोगों द्वारा दीये जलाकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया। अयोध्या में साल 2017 से दीपोत्सव कार्यक्रम हो रहा है। हर साल यहां दीयों की संख्या बढ़ जाती है। शुरुआत में यहां एक लाख के करीब दीये जलाए गए थे। अब यह संख्या 26 लाख के पार पहुंच चुकी है।

लगातार नौवीं बार यह विश्व रिकॉर्ड बना है। सीएम योगी आदित्यनाथ, प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही सहित अन्य इस अद्भुत व अविस्मरणीय क्षण के साक्षी बने। दूसरा रिकॉर्ड सरयू आरती का रहा, जिसमें एक साथ 2100 वेदाचार्यों ने हिस्सा लिया। यह अनूठा रिकॉर्ड योगी सरकार ने दूसरी बार हासिल किया है।

दीपोत्सव के इस दुर्लभ दृश्य को देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग उमड़े। दीपोत्सव के बाद यहां भव्य

■ **दीपोत्सव के बाद भव्य आतिशबाजी तथा ड्रोन शो का आयोजन हुआ। देश के कोने-कोने से श्रद्धालु इस अवसर पर अयोध्या आये थे।**

आतिशबाजी और ड्रोन शो का आयोजन हुआ।

गिनीज बुक की 75 सदस्यीय गणना टीम ने शनिवार को सरयू के 56 घाटों के दीयों की गणना विश्वविद्यालय के पर्यवेक्षक, घाट प्रभारी, समन्वयक व गणना वॉलंटियर की मौजूदगी में की। दीये जलाने से पहले घाट पर तेल न गिरे, इसका विशेष ध्यान रखा गया। दीये में तेल डालने के बाद बाती के आगे वाले भाग पर कपूर का पाउडर लगाया गया, इससे स्वयंसेवकों को दीये प्रज्ज्वलित करने में आसानी हुई।

सीएम योगी ने दीपोत्सव के मौके पर कहा कि जहां कभी गोलियां चली थीं, वहां अब दीये जल रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये दीये 500 वर्षों के अंधकार पर विजय का प्रतीक हैं।

योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में संतों और महंतों का अभिवादन किया। वेसरयू नदी के तट पर राम की पैड़ी पर आयोजित होने वाले दीपोत्सव में शामिल होने पहुंचे हैं। इस मौके पर अयोध्या में शानदार ड्रोन शो और आतिशबाजी भी हुई।सीएम योगी ने कहा, "मैं दीपोत्सव 2025 पर राज्य के लोगों को शुभकामनाएं देता हूं। दीपोत्सव के इस कार्यक्रम के माध्यम से हमने उत्तर प्रदेश की एक पहचान बनाने की कोशिश की है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उत्तर प्रदेश के नागरिकों की पहचान से समझौता न हो और कोई भी उनकी आस्था के साथ खिलवाड़ करने की हिम्मत न करे, उत्तर प्रदेश में डबल इंजन की सरकार बनने के बाद, हमने निरंतर प्रयास किए हैं।"

दीपोत्सव को सकुशल संपन्न कराने के लिए लगभग 10 हजार जवानों ने सुरक्षा की कमान संभाली। खुफिया एजेंसियां विभिन्न स्वरूपों में इनपुट तलाशती रहीं। चप्पे-चप्पे पर पुलिस, पीएसी, आरएएफ के जवान मुस्तैद रहे। आयोजन सकुशल संपन्न होने पर सुरक्षा एजेंसियों ने राहत की सांस ली है।

सार-समाचार

कुलगुरू प्रो. शर्मा ने कार्य संभाला

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के जयनारायण व्यास यूनिवर्सिटी के नए कुलगुरू प्रो. पवन कुमार शर्मा ने रविवार को कार्यभार संभाल लिया है। इस मौके उन्होंने कहा कि उनका मुख्य फोकस सेल्फ एंप्लॉयमेंट, नए कोर्स शुरू करने और विश्वविद्यालय की जो एक समय पुरानी अंतरराष्ट्रीय स्तर की छवि थी, उसे दोबारा हासिल करना है। इसके लिए सभी के साथ मिलकर काम करेंगे। कुलगुरू ने कहा कि यहां 9 माह से उचित व्यवस्था नहीं थी। इसलिए दीपावली की छुट्टी के दौरान ही कार्यभार संभालना पड़ा। उन्होंने बताया कि उनकी प्राथमिकता रहेगी की नई शिक्षा नीति का प्रभावी क्रियान्वयन यूनिवर्सिटी में हो। सबसे बड़ी समस्या है कि यहां बड़ी कंपनिया प्लेसमेंट के लिए नहीं आ रही है। जिसकी वजह से रोजगार की समस्या उत्पन्न हो रही है। इस पर नई शिक्षा नीति में उनका प्रयास रहेगा कि हम सभी मिलकर सेल्फ एम्प्लॉयमेंट पर प्रयास करेंगे। कुलगुरू ने कहा कि पूरे विश्व में मारवाड़ी एंटरप्रेन्योरशिप का डंका बजता है। उनकी मदद से स्किल डेवलपमेंट और सेल्फ रोजगार के अवसर पैदा किए जाएंगे। कुलपति ने कहा कि उनका मुख्य फोकस सेल्फ एंप्लॉयमेंट की स्टडी पर रहेगा। इसके अलावा राष्ट्र निर्माण में जो आवश्यक बातें हैं उन्हें सिलेबस में डाला जाएगा। उन्होंने कहा कि यहां कम्युनिटी एंजेजमेंट पर काम किया जाएगा। सिर्फ डिग्री लेना ही मकसद नहीं है। जो यहां से पढ़कर जाए वो अनेकों को नौकरी दें, राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग करें। उस पर काम किया जाएगा। यूनिवर्सिटी के पूर्व कर्मचारियों के पेंशन के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि संगठन के रूप से यूनिवर्सिटी ह्यूमन रिसोर्स से जाना जाता है, हम सभी लोग मिलकर इस समस्या का निवारण करेंगे। एक समय था जब इस यूनिवर्सिटी का परचम पूरे विश्व में लहराता था। हमारा प्रयास यही रहेगा कि आने वाले दिनों में यूनिवर्सिटी की प्रतिष्ठा फिर से वापस पाने के लिए प्रयास करेंगे।

'विषयभोगों में सच्चा सुख नहीं है'

जोधपुर, (कासं)। चौरड़िया भवन में विराजित सुमति मुनि ने रविवार को भगवान महावीर स्वामी की अंतिम निवार्ण देशना के कम्मप्पयडी अध्ययन की विवेचना करते हुए कहा कि विषयभोगों को छोड़ कर जीव को अपने गुणों को अंगीकार करना चाहिए ।जिसके पास आत्म गुणों का अनुभव है। उनका सत्संग करे। विषय भोग पराधीनता है। इसमें स्वपन मात्र भी सुख नहीं है। स्वाध्याय के निमित गुरु हमारे साथ है। अच्छे कार्य में बढ़ने पर विघ्न तो आयेंगे। मगर इससे विचलित होने की जरूरत नहीं है। संसार में हमेशा लोग यह अपेक्षा रखे है कि लाओ- लाओ, लेकिन प्रभु कहते हैं कि अपने निज स्थान में लोटकर अपने निज गुणों में रहो। हमको आसक्ति ममता छोड़ कर प्रभु के बताए मार्ग पर चलना चाहिए। इससे पूर्व साध्वी श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि सामने वाला गलती, भूल कर रहा, अपमान कर रहा है, यह धूल के समान प्रमाद है । आप धैर्य व विवेक से इसकी सफाई कर सकते है । गुस्सा किया तो घर में आग आग जायेंगी। आप आपस मैं बेठ कर संवाद कर यानि सामने वालों की बात सुनने की तैयारी करें, लेकिन विवाद नहीं करे। । संवाद से रास्ता निकल ही जायेगा। संघ अध्यक्ष देवराज बोहरा मंत्री माणक ललवानी अशोक बोहरा ने बताया कि आज जयमल पाठशाला के बच्चों का ज्ञान शिविर 5 वे दिन भी जारी रहा। आज शिविर में 152 बच्चों ने भाग लिया। संचालन राजेन्द्र लुणिया ने किया।

मंत्री पटेल घायल यात्रियों से मिले

जोधपुर, (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल रविवार को जैसलमेर बस दुर्घटना में घायल यात्रियों से मिलने जोधपुर के महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचे। पटेल ने यहां घायलों की कुशलक्षेम पूछी। उन्होंने परिजनों से संवाद करते हुए कहा कि यह घटना पीड़ादायक है। राज्य सरकार इस संकट की घड़ी में पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है। पटेल ने कहा कि चिकित्सा विभाग एवं प्रशासन ने राहत एवं इलाज संबंधित सभी कार्यों को सक्रियता के साथ किया है। इससे घायलों को सहायता और बेहतर सुविधा समय पर मिल पाई। डॉक्टरों से मरीजों की स्थिति, जलने के प्रतिशत, इलाज और संसाधनों की उपलब्धता की जानकारी ली। संसदीय कार्य मंत्री ने वेंटिलेटर, ऑक्सीजन सपोर्ट, इंटेंसिव केयर बेड्स, दवाइयों और नर्सिंग स्टाफ की स्थिति की समीक्षा की। साथ ही हर मरीज के इलाज के लिए 24 घंटे मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने अस्पताल परिसर में परिजनों से भी मुलाकात की। उनके ठहरने, भोजन एवं अन्य सुविधाओं की जानकारी ली। एसएन मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ बी.एस. जोधा, एमजीएच के अधीक्षक डॉ. फतेह सिंह भाटी आदि मौजूद रहे।

अल्पसंख्यक वर्ग को ब्याज में छूट

जालोर, (नि.सं.)। मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत अल्पसंख्यक वर्ग के हित में एक मुश्त समाधान योजना 2025 लागू की गई है जिससे अल्पसंख्यक वर्ग को बकाया ऋण के ब्याज में राहत दी जा रही है। योजना के प्रथम चरण की अवधि को 30 सितम्बर से बढ़ाकर 31 अक्टूबर तक किया गया गया है। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी एजाज अहमद ने बताया कि इस योजना के तहत राजस्थान अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास सहकारी निगम लिमिटेड द्वारा अल्पसंख्यक वर्ग को दिए गए व्यावसायिक, शिक्षा एवं माइक्रो ऋण की बकाया राशि को एकमुश्त जमा कराने पर ब्याज एवं दण्डनीय ब्याज में छूट प्रदान की जा रही है। उन्होंने बताया कि योजना को दो चरणों में लागू किया गया है। प्रथम चरण 31 अक्टूबर 2025 तक होगा, जिसमें ऋणी द्वारा बकाया राशि जमा कराने पर ब्याज एवं दण्डनीय ब्याज पूरा माफ किया जाएगा। ऋणी को केवल बकाया मूलधन ही जमा करवाना होगा। द्वितीय चरण में 1 नवम्बर से 31 दिसम्बर 2025 तक केवल दण्डनीय ब्याज माफ किया जाएगा। ऋणी को मूलधन के साथ-साथ ब्याज भी जमा करवाना होगा। इस महत्वपूर्ण योजना का लाभ लेने के लिए नर्मदा कॉलोनी जालोर स्थित अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी कार्यालय जालोर से सम्पर्क कर आवेदन करना होगा।

सम्प्रेषण गृह का निरीक्षण

जालोर, (कासं)। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश अहसान अहमद ने शुक्रवार राजकीय किशोर एवं सम्प्रेषण गृह का निरीक्षण किया। उन्होंने सुरक्षित एवं सम्प्रेषण गृहों के बालकों से वार्तालप की एवं उनके प्रकरणों के बारे में जानकारी प्राप्त की। अधीक्षक मोर कंवर ने बताया कि यहां पर प्रति बालकों की ओर से योग करवाया जाता है जिसमें बच्चे भाग लेकर प्रतिदिन योग करते है। उन्होंने बताया कि जो बालक पढने वाले है उनको पढ़ाई करवाई जाती है और प्रतिदिन पढाई करते है। इसी प्रकार बच्चे कम्प्यूटर भी सीख रहे है। बालकों के लिए किए जा रहे इन प्रयासों की सराहना की। इस दौरान सचिव ने रसोई घर का भी अवलोकन किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सचिव ने कहा कि बालकों के भोजन की गुणवत्ता में किसी प्रकार की कोताही नहीं बरते। इस दौरान बालकों को निशुल्क विधिक सहायता योजना सहित अन्य कानूनी जानकारी दी गई। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिशु का समय समय पर स्वास्थ्य जांच करवाई जावे एवं आवश्यक दवाइयां दी जावे।

खेल भावना से खेलना चाहिए : देवल

रेवदर, (नि.सं.)। उपखंड मुख्यालय पर गर्ग समाज की ओर से क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन समारोह शनिवार को धूमधाम से आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जालोर जिला प्रमुख राजेश राणा एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष हिमपाल सिंह देवल विजेता खिलाडियों को पुरस्कृत किया और कहा कि खेल को हमेशा खेल की भावना से खेलना चाहिए। हार-जीत खेल का हिस्सा है, लेकिन असली विजेता वही है जो अनुशासन, टीम भावना और मेहनत से मैदान में उतरता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के आज खेलों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं, जो समाज के लिए गर्व की बात है। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर विजेता एवं उपविजेता टीमों को शील्ड और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। समारोह में उत्साह और जोश के साथ अपनी खेल प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में कांग्रेस अभाव अभियोग प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष पुनम चंद पुरोहित, शैलेंद्र सिंह भाटी, कन्हैयालाल गर्ग दानाराम गर्ग, दिनेश गर्ग सहित कई लोग मौजूद रहे।

जन्म-मृत्यु रजिस्ट्रीकरण पर चर्चा 27 को

जालोर, (कासं)। जिले में जन्म-मृत्यु रजिस्ट्रीकरण से संबंधित कार्य की समीक्षा के लिए गठित जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक समिति के अतिरिक्त मुख्य रजिस्ट्रार (जन्म-मृत्यु) एवं जिला कलक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में 27 अक्टूबर को दोपहर 1 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की जायेगी। आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के जिला रजिस्ट्रार (जन्म-मृत्यु) डॉ. धनसिंह राजपुरोहित ने बताया कि बैठक में जन्म-मृत्यु रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के अंतर्गत रजिस्ट्रीकरण के क्रियान्वयन का समन्वय, पुनरावलोकन एवं मूल्युंकन करने सहित कई कार्यों की समीक्षा की जायेगी।

दीपावली आज, बाजारों में लोगों की भीड़ से रौनक आई

जालोर, (कासं)। जिलेभर में दीपोत्सव की धूम मची हुई है। दीपावली पर्व सोमवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। दीपावली पर्व को लेकर बाजारो मे रौनक नजर आई। लेकिन इस बार दीपावली पर्व को लेकर असमंजस्य की स्थिति बनी हुई है। अमावस्या मंगलवार को होने से कुछ लोग दीपावली पर्व मंगलवार को होने की बात कर रहे है। वही शहर के भीतर पटाखे दुकानो को लाईसेंस देना आमजन के लिए खतरा का सबब बन सकता है।

जालोर मे दीपावली पर्व को लेकर बाजारो में रौनक नजर आ रही है। जालोर शहर में दीपोत्सव को लेकर पटाखे, मिष्ठान, बर्तन, इलेक्ट्रिकल, मोबाइल व कपडो की दुकानो पर भीड अधिक नजर आई। लोगो ने दीपावली पर्व को लेकर जमकर खरीददारी की। रविवार को शहर के सुभाष मार्केट, सदर बाजार, गांधी चौक, सरदार पटेल मार्ग, वन वे मार्ग, हरिदेव जोशी सर्किल, नया बस स्टेण्ड, हॉस्पीटल चौराहा सहित शहर के सभी बाजारो को व्यापारियो द्वारा आकर्षक रोशनी से सजाया गया है। बाजार रोशनी से चकाचौध गुलजार नजर आ रहे है। वही सरकार द्वारा जीएसटी कम करने से इस बार दुकानदारो द्वारा सामान में भारी छूट के चलते दीपावली पर्व पर अच्छी खासी बिक्री हुई है। दीपावली का पर्व सोमवार को मनाया जायेगा।दीपावली पर्व को लेकर माता लक्ष्मी पूजन के साथ घर मे सुख समृद्वि एवं खुशहाली की कामना की जायेगी। वही इस बार ग्रीन पटाखे के ही बाजार में बिक्री के लिए आने से पर्यावरण प्रदूषण का भी खतरा कम रहेगा। वही मिष्ठान व्यापारियों ने भी विभिन्न वैरायटी की मिठाई व नमकीन बाजार में उपलब्ध होने से लोगो ने जमकर खरीददारी की। व्यापारी भी शुभ मुहूर्त में अपने अपने व्यापार के बही खाता की शुरुआत पूजा अर्चना के साथ करेगे। वही दीपावली पर्व को लेकर लोगो में उत्साह नजर आ रहा है। मंगलवार को एक दूसरे को दिपावली की शुभकामनाएं देने का सिलसिल जारी रहेगा। वही 22 अक्टूबर को गोर्वधन पूजा में गौ माता की पूजन किया जायेगा। वही इस बार दिपावली पर्व को लेकर भी असंमजस्य की स्थिति नजर आ रही है। कलैंडर के अनुसार दिपावली 20 अक्टूबर को तथा भारतीय संस्कृति के अनुसार 21 अक्टूबर को अमावस्या होने से दिपावली पर्व मनाया जायेगा। दिपावली पर्व को लेकर जिलेभर में उत्साह , उमंग व उल्लास का माहौल नजर आ रहा है। दीपोत्सव के रंग में जालोर जिला रंगा नजर आ रहा है।

जालोर शहर के भीतर वीरमदेव चौक, गांधी चौक, पुरा मोहल्ला, सरदार पटेल मार्ग सहित अन्य भीड भाड वाली जगह पर पटाखो की दुकानो के लाईसेंस देने से आमजन के लिये खतरा का कारण बन सकता है। दीपावली पर्व पर शहर के भीतर काफी भीड भाड होने के साथ मार्ग संकरा होने से किसी भी आगजनी की घटना पर दमकल के पहुंचना भी मुश्किल है। ऐसे में पटाखो की दुकानो के लाईसेंस शहर के भीतर दने की बजाय शहर के बाहरी क्षेत्र में लाईसेंस देना चाहिए ताकि किसी प्रकार से जन हानि से बचा जा सकता है। वही नया बस स्टेण्ड पर भोजनालय के पास ही पटाखे की दुकान लगी हुई, जो हादसे को न्यौता दे रही है। ऐसे में प्रशासन को पटाखो के लाईसेस शहर के भीतर इलाको की बजाय शहर के बाहरी इलाको में देने चाहिए। जिससे जन हानि से बचा जा सके।

जोधपुर के प्रमुख चौराहों पर तैनात रहेगी दमकले

जोधपुर, (कासं)। दीपावली के त्यौहार पर संभावित आगजनी दुर्घटनाओं पर त्वरित काबू पाने के लिए नगर निगम उत्तर एवं दक्षिण ने अग्निशमन केन्द्र एंव मुख्य चौराहों पर अग्निशमन वाहन तैनात किए है। मंगलवार तक यह दमकल वाहन यहां खड़े रहेंगे और राउंड द क्लॉक दमकलकर्मियों की तैनाती की गई है। आयुक्त ने बताया कि दीपावली के मध्य नजर आगजनी की घटनाएं होने की संभावना बनी रहती है। किसी भी प्रकार की आगजनी की घटना पर त्वरित काबू पाने के लिए अलग-अलग स्थान पर दमकल वाहन तैनात किए गए हैं।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी दक्षिण जलज घसिया ने बताया कि नगर निगम के शास्त्री नगर, सीएचबी , बोरानाडा, बासनी फायर स्टेशन के अलावा जालोरी गेट चौराहा, सरदारपुरा थाना, राजीव गांधी तिराहा, आखलिया चौराहा पर दमकल खड़े रहेंगे।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी उत्तर जय सिंह चौहान ने बताया कि इसी प्रकार नगर निगम उत्तर के नागोरी गेट, मंडोर, फायर स्टेशन पर राउंड द क्लॉक दमकलकर्मियों की तैनाती की गई है, साथ ही घंटाघर के, पुलिस कंट्रोल रूम, रामसागर चौराहा पर भी दमकल खड़ी रहेगी और वहां भी पर्याप्त स्टाफ तैनात किया गया है।

जैसलमेर क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा में सुधार की बाट

पोकरण,(नि.सं.)। विश्वविख्यात पर्यटक नगरी जैसलमेर, परमाणु नगरी पोकरण जहां देश-विदेश से हर साल लाखों सैलानी आते हैं। जिला, जो आज सौर और पवन ऊर्जा का हब बन चुका है, एशिया की सबसे बडी फील्ड फायरिंग रेंज का धनी है, जहां पर्यटन से करोडों का कारोबार होता है और बाबा रामदेवरा मेले में लाखों श्रद्धालु उमडते हैं। वहीं स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति आज भी बेहद चिंताजनक बनी हुई है।

जैसलमेर जिले में बडी-बडी कंपनियों से फंड आता है, सरकारी योजनाओं के तहत करोडों की स्वीकृतियां जारी होती हैं, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री और फिल्म जगत के सितारे आते-जाते हैं। लेकिन जैसलमेर-पोकरण के अस्पताल दशकों से बदहाल हैं। यहां न तो अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण हैं, न ट्रॉमा सेंटर पूरी तरह कार्यरत है, न बर्न यूनिट मौजूद है। किसी भी बडे हादसे या गंभीर मरीज की स्थिति में आज भी परंपरा वही रेफर टू जोधपुर किया जाता है।

लगभग 300 किलोमीटर का यह सफर कई जिंदगियों को बीच रास्ते में निगल जाता है। निजी बस में लगी आग की भीषण घटना ने एक बार फिर इस कमी को उजागर कर दिया है। घायलों के परिजन और मृतकों की आत्माएं मानो यही सवाल पूछ रही हैं। कब बनेगा जैसलमेर जिले में बडा चिकित्सालय? सरकार और जनप्रतिनिधियों से सवाल आखिर सरकार, प्रशासन और जनप्रतिनिधि चिकित्सा क्षेत्र में इतनी अनदेखी क्यों कर रहे हैं? क्या विकास केवल सर्किट हाउस, सडकें और स्वागत के कार्यक्रमों तक सीमित है? क्या आमजन का जीवन इतना सस्ता है कि हर बार हादसे के बाद रेफर टू जोधपुर ही नियति बन जाए?

अब जनता का यह सवाल सत्ता के गलियारों में गूंज रहा है । जब पर्यटन, ऊर्जा, सेना और व्यापार के क्षेत्र में जैसलमेरदेशभर में अग्रणी है, तो स्वास्थ्य सुविधा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने से इसे कौन रोक रहा है? सरकार को चाहिए कि पोकरण में बन रहे ट्रॉमा सेंटर का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा करे, और जैसलमेर जिले को अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से युक्त बडा चिकित्सालय मिले ताकि रेफर टू जोधपुर की दर्दभरी परंपरा अब इतिहास बन जाए।

10 ग्राम पंचायतों में ग्रामीण सेवा शिविर लगे

जालोर, (कासं)। केन्द्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से आमजन को लाभांवित करने तथा उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए शनिवार को जिले की 10 ग्राम पंचायतों में ग्राम सेवा शिविर का आयोजन किया गया।

जिले में शनिवार को जालोर तहसील की सांथू व नून, आहोर तहसील की डोडीयाली व हरजी, रानीवाड़ा तहसील की रतनपुर व सेवाड़ा, सांचौर तहसील की सरवाना व पालडी सोलंकियान एवं चितलवाना तहसील की गोमी व हाडेचा ग्राम पंचायत में ग्रामीण सेवा शिविर का आयोजन कर ग्रामीणों को केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं से लाभान्वित किया गया। ग्रामीण सेवा शिविरों में आमजन को राजस्व विभाग द्वारा लंबित फार्मर रजिस्ट्री पूर्ण करवाना, आपसी सहमति से विभाजन, किसान गिरदावरी एप डाउनलोड कराना एवं किसान गिरदावरी के लिए प्रेरित करना, नामांतरण, मूल निवास एवं जाति प्रमाण पत्र जारी करने, ग्रामीण विकास विभाग द्वारा बीपीएल परिवारों का सर्वे एवं विकास कार्यों की स्वी.तियां जारी करने, पंचायती राज विभाग द्वारा स्वामित्व योजना के पट्टों हेतु आवेदन एवं वितरण, चिकित्सा विभाग द्वारा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य जांच, कैंसर व सिकल सेल रोग, स्क्रीनिंग, बच्चों का टीकाकरण, टीबी मुक्त भारत अभियान अंतर्गत जांच एवं पोषण किट वितरण तथा पीएमजेवाई कार्ड वितरण किया जाएगा। पशुपालन विभाग द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर और टीकाकरण, ऊर्जा विभाग द्वारा बिजली से जुड़ी समस्याओं का समाधान, .षि विभाग द्वारा बीज मिनी किट वितरण तथा आयोजना विभाग द्वारा विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया। रसद विभाग द्वारा एनएफएसए के लंबित प्रकरणों का निस्तारण एवं पात्र परिवारों की आधार सीडिंग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, पालनहार योजना, मुख्यमंत्री घुमंतु आवास योजना, छात्रावासों का रखरखाव, यूडीआईडी कार्ड बनाने इत्यादि कार्य किए गए।

महालक्ष्मी की आज होगी पूजा

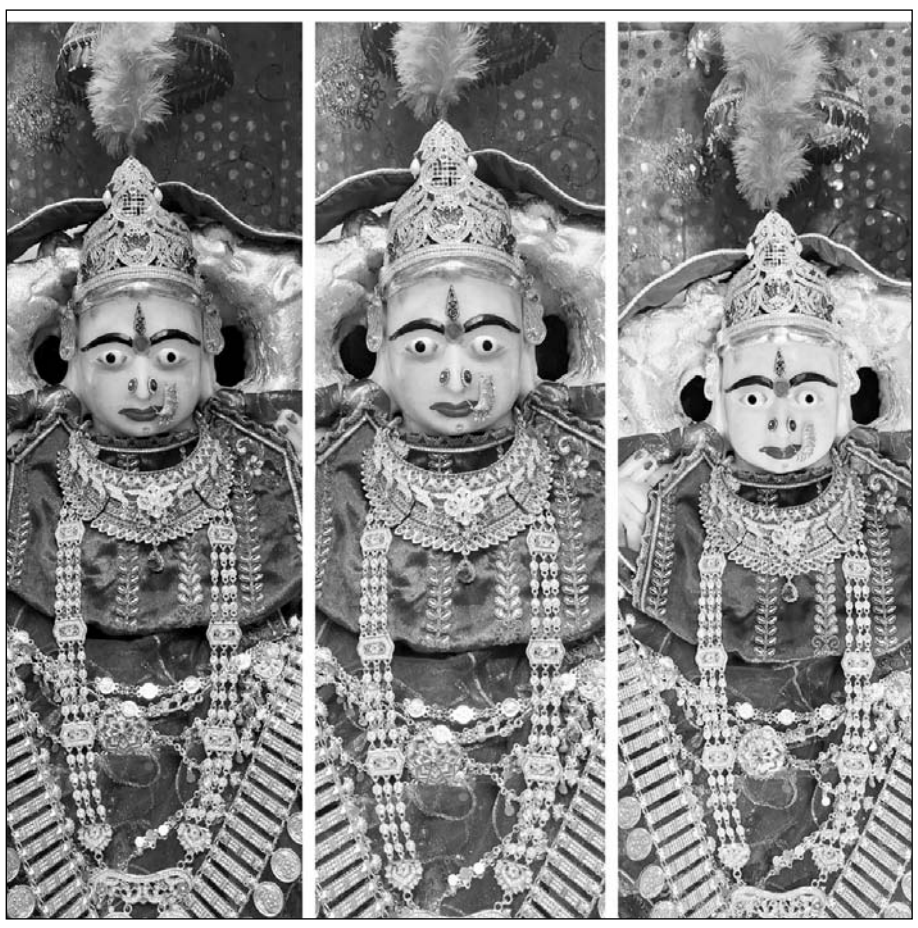

पाली में ब्रह्मपुरी में विराजित महालक्ष्मी माता दीपावली के दिन तीन रूप में दर्शन देगी। प्रातः तरूणी, दोपहर में युवा एवं सायंकाल पश्चात पुर्ण व्यस्क रूप में दर्शन होंगे। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। ब्रह्मपुरी विराजित महालक्ष्मी माता दीपावली के दिन तीन रूप में दर्शन देगी। प्रातः तरूणी, दोपहर में युवा एवं सायंकाल पश्चात पुर्ण व्यस्क रूप में दर्शन होंगे।

पुजारी पंडित सोनु दवे के मुताबिक़ माता के वर्ष में मात्र दो बार इस रूप में दर्शन होते है। माता की महत्ती पूजा अर्चना के दिवस दीपावली कार्तिक अमावस्या एवं प्राकट्यय दिवस अश्विन कृष्ण अष्टमी को इस रूप में दर्शन प्रदान करती है। दीपावली पर धनतेरस से पुजा अर्चना प्रारंभ की जाती हैं,अभिषेक के साथ मुद्रा को अभिमंत्रित किया जाकर पूजन प्रारंभ किया जाता हैं। दीपमालिका से स्तुति लगातार कार्तिक पूर्णिमा तक की जाती है! सोमवार को तीनों रूप में दीपावली के दिन दर्शन किए जा सकते है।

पाली श्रीमाली ब्राह्मण विकास समिति पाली के अध्यक्ष पी एम जोशी ने बताया कि समाज की ओर से 101 किलो प्रसाद के साथ ही दीपावली के दिन रात्रि 9 बजे महाआरती की जाएगी। प्रतिवर्ष हज़ारों श्रद्धालुओं द्वारा पंक्तिबद्ध होकर दर्शन किए जाते हैं। समाज की ओर से हर श्रद्धालु को अभिमंत्रित मुद्रा एवं सौभाग्य द्रव्य प्रसाद के साथ प्रदान किया जाता है। इस बार विशेष रूप से अयोध्या से मंगवाई गई 108 दीपज्योति प्रज्ज्वलित होगी।

रूप चौदस पर रोशनी से नहाया पाली शहर

दीपावली की पूर्व संध्या रूप चौदस पर शहर के बाजार में जोरदार खरीददारों की भीड़ रही। मुख्य बाजारों चौराहा पर लोगों ने आकर्षक रोशनी से सजाया गया। घरो की मुंडेर पर महिलाओं ने सज धज कर दीपक जलाए। सोमवार को शहर में दीपावली मनाई जाएगी।

प्रमाणित आतिशबाजी की होगी अनुमति

जालोर, (कासं)। उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार व वायु गुणवत्ता सूचकांक द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों की अनुपालना में राज्य के गृह विभाग द्वारा आतिशबाजी के उपयोग व चलाने के संबंध में गाइडलाइन जारी की। जिला मजिस्ट्रेट डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने बताया कि उच्च न्यायालय के 26 सितम्बर, 2025 को दिए गए आदेश की अनुपालना में जिले में शांत क्षेत्र (साइलेंट जोन) यथा- अस्पताल, नर्सिंग होम, प्राथमिक एवं जिला स्वास्थ्य केन्द्र, शिक्षण संस्थाएँ, न्यायालय, धार्मिक स्थानों से 100 मीटर के क्षेत्र में पटाखें (फायरवर्क्स) नहीं चलाएं जा सकेंगे। जिले में कॉलेजो एवं स्कूलों में पटाखों के जलने से होने वाले नुकसान के सम्बन्ध में जागरूकता अभियान के साथ ही आमजन को भी इस सम्बन्ध में जागरूक किया जायेगा।

भगवान धन्वंतरि की पूजा की

पाली, ()। धनतेरस के अवसर पर शहर के पुराने कचहरी स्थित जिला आयुर्वेदिक अस्पताल में दोपहर 3:00 बजे भगवान धन्वंतरि की पूजा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें कई उठकर अधिकारी विमलेंद्र सिंह राठौर, पूर्व सभापति महेंद्र बोहरा, के सी सैनी, जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉक्टर शिव प्रकाश शर्मा ने भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चना की। डॉक्टर शिव प्रकाश शर्मा ने आयुर्वेद विभाग की चिकित्सा पद्धित के बारे में जानकारी दी।

जालोर में मुस्लिम समाज (रकमा) के समारोह में होनहारों को सम्मानित किया। फोटो-राष्ट्रदूत

दीपावली के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश

पाली, (नि.सं.)। जिला मजिस्ट्रेट एलएन मंत्री ने दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं भैयादूज पर 20, 22 व 23 अक्टूबर को जिले के सभी संबंधित अधिकारियों को कानून एवं शांति व्यवस्था के लिए आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है।

जिला मजिस्ट्रेट मंत्री ने आदेश में शांति सद्भावना, कानून व्यवस्था एवं अग्नि सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने तथा भीडभाड वाले स्थानों पर अपेक्षित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि अधीक्षण अभियंता डिस्कॉम शहर एवं जिले के सभी ग्रामों एवं कस्बों में पर्याप्त एवं नियमित विद्युत सप्लाई तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं से बचने के लिए समस्त आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें।

सभी उपखण्ड मजिस्ट्रेट, तहसीलदार, विकास अधिकारी पंचायत समिति, आयुक्त नगर परिषद, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका एवं अन्य समस्त विभागों के कार्यालयाध्यक्ष व अन्य अधिकारीगण पर्व के दौरान मुख्यालय पर उपस्थित रहेंगे। अधीक्षण अभियन्ता जलदाय सभी क्षेत्रों में पर्याप्त एवं नियमित पानी की सप्लाई, सीएमएचओ, बांगड़ चिकित्सा प्रिंसीपल को, राजकीय कॉलेज मेडिकल पाली को पर्व के दौरान चिकित्सा सुविधा, एम्बुलेंस, इमरजेंसी सेवा व डॉक्टरों की टीम की व्यवस्था रखेंगे, पर्व के दौरा आतिशबाजी से होने वाली दुर्घनाओं के संबंध में आग से जलने पर प्राथमिक उपचार के संबंध में एडवाईजरी जारी करेंगे, आयुक्त नगर परिषद अग्निशमन वाहनों मय तकनीकी स्टाफ तैनात रखेंगे एवं आवश्यकता पडने पर उन्हें तुरन्त कार्यवाही के लिए भेजेंगे।

उन्होंने नगर परिषद आयुक्त पाली को शहर में पूर्ण सफाई एवं रोशनी की व्यवस्था, आवारा पशुओं के विचरण को रोकने की कार्यवाही करेंगे ओर संबंधित नगर पालिकों के अधिशाषी अधिकारी अपने अपने क्षेत्र में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने समस्त उपखंड मजिस्ट्रेट को अपने उपखंड क्षेत्र में लगने वाले अस्थाई/स्थाई आतिशबाजी मार्केट के लिए आतिशबाजी विक्रेता से अग्निशमन यंत्र सहित समस्त आवश्यक व्यवस्थाओं यथा पानी के ड्रम, बाल्टी, मिटटी की बाल्टीयां इत्यादि विक्रय स्थल के समीप रखना सुनिश्चित करवाएंगे तथा संबंधित नगर परिषद व नगर पालिका के माध्यम से फायर ब्रिगेड की व्यवस्था निकटतम क्षेत्र में करवाया जाना भी सुनिश्चित करेंगे तथा पेट्रोल पम्प, गैस गोदाम, ज्वलनशील पदार्थो के विक्रय, भण्डार स्थल के निकट अस्थाई या स्थाई आतिशबाजी का विक्रय या प्रदर्शन नहीं हो इसके लिए आवश्यक निरीक्षण संबंधित विभागों के साथ किया जाकर संबंधित की सुरक्षा के लिए निर्देश जारी कर अपेक्षित व्यवस्था सुनिश्चित करवाएंगे। जिला पुलिस अधीक्षक एवं अन्य अधिकारी पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत विरचित ध्वनि प्रदूषण (विनिमय एवं नियंत्राण) नियम 2000 के अन्तर्गत ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण उपायों एवं ध्वनि के परिपेक्ष्स में परिवेशी वायु गुणवत्ता की पालना कराने के लिए प्राधिकारी घोषित किया है, जिसकी पालना सुनिश्चित करेंगे।

वहीं कलेक्टर एल.एन मंत्री की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक 14 अक्टूबर को दोपहर 12:30 बजे आयोजित की जानी थी, जो अब 31 अक्टूबर को दोपहर 12:30 बजे आयोजित की जायेगी।

कार्यपालक मजिस्ट्रेट लगाए

पाली, (नि.सं.)। जिला मजिस्ट्रेट एलएन मंत्री ने धार्मिक पर्व दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं भैयादूज 20 से 23 अक्टूबर 2025 को मनाए जाने के अवसर पर जिले में कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए 24 कार्यपालक मजिस्ट्रेट नियुक्त किए है।

आदेश के तहत संपूर्ण उपखण्ड पाली के लिए उपखंड मजिस्ट्रेट पाली, पाली शहर के लिए तहसीलदार पाली, ग्राम खैरवा के लिए नायब तहसीलदार पाली, संपूर्ण उपखंड क्षेत्र रोहट के लिए उपखण्ड मजिस्ट्रेट रोहट, थाना क्षेत्र जैतपुर, तहसील रोहट के लिए तहसीलदार रोहट, संपूर्ण उपखंड क्षेत्र बाली के लिए उपखंड मजिस्ट्रेट बाली, फालना थाना क्षेत्र के लिए तहसीलदार बाली, उप तहसील क्षेत्र नाणा के लिए नायब तहसीलदार नाणा, उप तहसील क्षेत्र बेड़ा के लिए नायब तहसीलदार बेड़ा, सम्पूर्ण उपखण्ड क्षेत्र सुमेरपुर के लिए एसडीएम सुमेरपुर, पुलिस थाना क्षेत्र साण्डेराव के लिए नायब तहसीलदार सुमेरपुर, पुलिस थाना क्षेत्र तखतगढ़ के लिए नायब तहसीलदार तखतगढ़ को कार्यपालक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया।

सम्मान निधि की चतुर्थ किश्त जारी

जालोर,(नि.सं.। राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा शनिवार को धरतेरस के अवसर पर नदबई, जिला-भरतपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजनान्तर्गत सम्मान निधि की किश्त जारी की गई तथा लाभार्थियों से वर्चुअल संवाद किया गया। इसी क्रम में मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि का जिला स्तरीय कार्यक्रम कलेक्ट्रेट सभागार में कलक्टर डॉक्टर प्रदीप के गावंडे की अध्यक्षता में आयोजित हुआ।

उप रजिस्ट्रार, सहकारी समितियाँ सुनील वीरभान ने बताया कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजनान्तर्गत जिले के 2,25,106 किसानों के खातों में कुल 22 करोड़ 51 लाख 6 हजार रूपये की सम्मान निधि का हस्तांतरण किया गया।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष 3 हजार की राशि तीन किश्तों में प्रति किश्त 1 हजार प्रति कृषक दिये जाने की बजट घोषणा की गई है।

168.440 किलोग्राम डोडा पोस्त और 2 चोरी की लग्जरी कारें जब्त, 1 तस्कर गिरफ्तार

बालोतरा, (नि.सं.)। जिला बालोतरा पुलिस ने नशाखोरी पर प्रभावी नियंत्रण और मादक पदार्थ तस्करों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान ऑपरेशन विष दमन के तहत एक बडी कार्रवाई करते हुए मादक पदार्थ तस्करी एवं वाहन चोरी के संगठित आपराधिक गिरोह का पर्दाफाश किया है। इस कार्रवाई में 168.440 किलोग्राम अवैध डोडा पोस्त और चोरी की दो लग्जरी कारें जब्त की गई हैं। पुलिस ने आरोपी तस्कर मुकेश कुमार को गिरफ्तार किया है।

पुलिस अधीक्षक रमेश आईपीएस ने बताया कि पुलिस मुख्यालय की मंशा के अनुरूप जिले में मादक पदार्थ तस्करी की रोकथाम के लिए यह अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बालोतरा गोपालसिंह भाटी आरपीएस और वृताधिकारी बायतु शिव नारायण चैधरी आरपीएस के निकटतम सुपरविजन में, जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) बालोतरा और बायतु थानाधिकारी महेश गोयल के नेतृत्व में पुलिस टीम ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की। 17 अक्टूबर को डीएसटी बालोतरा द्वारा बायतु थानाधिकारी महेश गोयल उनि. को सूचना मिली कि लीलाला निवासी मुकेश कुमार पुत्र मानाराम जाट अवैध डोडा पोस्त तस्कर है और उसके घर पर चोरी की इनोवा क्रिस्टा व टाटा हैरियर गाडियाँ खडी हैं तथा अवैध डोडा पोस्त की खेप छिपाकर रखी हुई है। सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए पुलिस टीम ने आरोपी मुकेश कुमार के रहवासी ढाणी और उसके खेत में दबिश दी। तलाशी के दौरान, आरोपी द्वारा खेत में बाजरे की फसल के बीच, डोका के नीचे छिपाकर रखे गए 8 प्लास्टिक के काले कट्टों से कुल 168.440 किलोग्राम अवैध डोडा पोस्त बरामद किया गया।

इसके अतिरिक्त, आरोपी के घर के आगे खडी चोरी की सफेद रंग की इनोवा क्रिस्टा कार जब्त की गई, जिस पर फर्जी नंबर प्लेट लगी थी। जांच में पता चला कि वाहन के चेसिस नंबर घिसे हुए थे और डोडा पोस्त परिवहन के लिए पिछली सीटें हटाई गई थीं। कार के अंदर से अलग-अलग नंबरों की 6 फर्जी नंबर प्लेटें भी बरामद हुईं। इसी प्रकार एक अन्य बिना नम्बरी सफेद रंग की टाटा हैरियर कार भी जब्त की गई, जिसके चेसिस नंबर भी घिसे हुए थे। पुलिस ने मौके से आरोपी मुकेश कुमार पुत्र मानाराम जाट निवासी लीलाला, थाना बायतु को गिरफ्तार किया। आरोपी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट की धारा के तहत आपराधिक प्रकरण पंजीबद्ध कर अग्रिम अनुसंधान जारी है।

बालोतरा के निकट बायतु पुलिस ने अवैध डोडा पोस्त सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया। फोटो राष्ट्रदूत

- बायतु थानाधिकारी महेश गोयल के नेतृत्व में पुलिस टीम को सफलता मिली

फ्रिज में अचानक ब्लास्ट, हड़कम्प मचा

भीलवाड़ा। जिले के मांडल उपखंड क्षेत्र के चक्की चौराहा (कोचरिया) में बीती रात एक मकान की रसोई में रखे फ्रिज में अचानक ब्लास्ट हो गया, जिससे क्षेत्र में हडकम्प मच गया। यह घटना चक्की चौराहा निवासी किशन पुत्र शंकर गुर्जर के मकान में हुई। विस्फोट के बाद आग की लपटें उठने लगीं और स्थिति गंभीर हो गई।बताया गया कि रसोई में रखे फ्रिज के पास एलपीजी गैस सिलेंडर रखा हुआ था, जिससे बड़ा हादसा होने की आशंका थी। इसी बीच पास के मकान से सरपंच के पुत्र कमलेश गुर्जर मौके पर पहुंचे। लोगों ने उन्हें सिलेंडर के पास होने की सूचना दी। कमलेश ने बिना किसी हिचकिचाहट के आग की लपटों के बीच सिलेंडर को बाहर निकाल लिया, जिससे बड़ा हादसा टल गया।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग लगने का कारण रसोई में लगे आरओ सिस्टम में हुई स्पार्किंग बताई गई है, जिससे आग फ्रिज तक पहुंची। और धमाका हुआ। हालांकि इस घटना में किसी की जान ना जाने की जानकारी मिली है, लेकिन रसोई का सामान जलकर नष्ट हो गया।

'ओपीएस योजना बंद करना राज्य कर्मचारियों के साथ अन्याय'

भरतपुर (निस)। राजस्थान में भाजपा सरकार द्वारा ओपीएस (ओल्ड पेंशन स्कीम) योजना को बंद किए जाने के निर्णय का जिला कांठोस कमेटी के अध्यक्ष दिनेश सूपा सहित समस्त पदाधिकारीयों ने कड़ा विरोध किया है।

जिलाध्यक्ष दिनेश सूपा ने कहा कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री जननायक अशोक गहलोत ने कर्मचारीयों के भविष्य की सुरक्षा निश्चित करने के उद्देश्य से ओल्ड पेंशन स्कीम योजना लागू की थी, लेकिन वर्तमान भाजपा सरकार ने बदले की नीयत से कार्रवाई करते हुए। इस योजना में फेरबदल करके नई पेंशन स्कीम योजना लागू करने के आदेश जारी किए हैं। जो की पूर्णतया न्याय संगत नहीं है एवं कर्मचारियों के हित में भी नहीं है।

इस नई पेंशन स्कीम में कई तरीके की विसंगतियां है जो कि कर्मचारियों के भविष्य को अंधकार में ले जाएंगी। जिला अध्यक्ष सूपा ने बताया कि राज्य में बोर्ड, निगम और विश्वविद्यालय कर्मचारीयों पर एनपीएस योजना लागू करने जो निर्णय भाजपा सरकार द्वारा लिया गया है, उसे तुरंत राज्य सरकार द्वारा कर्मचारीयों के हित में वापस ले लेना चाहिए।

दिनदहाड़े मोटरसाइकिल चोरी

भीलवाड़ा। जिले के आसींद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पास रविवार को दिनदहाड़े मोटरसाइकिल चोरी होने का मामला सामने आया है, जिसने इलाके की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह घटना मुख्य बाजार के बीचो-बीच हुई, जो कस्बे में रहने वाले लोगों के लिए बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है।पिछले कुछ महीनों से आसींद क्षेत्र में चोर गिरोह की सक्रियता के कारण कई दर्जनों मोटरसाइकिल चोरी होने की घटनाएं सामने आ रही हैं। हाल ही में पुलिस ने इस गिरोह का खुलासा करते हुए कार्यवाही भी की थी, लेकिन इसके बावजूद चोरी की घटनाएं थम नहीं रहीं। रविवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सामने बाइक चोरी की घटना के सीसीटीवी फुटेज में चोरों की हिम्मत साफ नजर आई, जो दिनदहाड़े खुलेआम मोटरसाइकिल चोरी करते दिखे।इस लगातार बढ़ती घटनाओं से इलाके में दहशत का माहौल बना हुआ है। लोग सुरक्षा को लेकर असुरक्षित महसूस कर रहे हैं और पुलिस की कार्यवाही को लेकर सवाल उठा रहे हैं। स्थानीय प्रशासन और पुलिस से जल्द ठोस कदम उठाने की मांग जोर पकड़ी है ताकि चोर गिरोह पर नियंत्रण पाया जा सके और आम जनता का रहने-खाने का माहौल सुरक्षित बनाया जा सके।

रोडवेज की बसों को जयपुर भेजने के 8 लाख रुपए गबन के मामले के महत्वपूर्ण दस्तावेज गायब

श्रीगंगानगर। यहां श्रीगंगानगर डिपो की ओर से रोडवेज की बसों को डेरा सच्चा सौदा के लिए जयपुर भेजने के 8 लाख रुपए गबन के मामले के महत्वपूर्ण दस्तावेज गायब हो गए। इस संबंध में तत्कालीन ट्रैफिक मैनेजर नरेंद्रपाल राणा के खिलाफ कोतवाली थाने में केस दर्ज करवाया गया है। इसकी जांच हेड कांस्टेबल रामकिशोर को सौंपी गई है। परिवादी रोडवेज आगार मुख्य प्रबंधक नरेंद्र चौधरी की ओर से कोतवाली में भेजे गए परिवाद में बताया गया है कि डेरा सच्चा सौदा के अनुयायियों को रोडवेज बसों में नियम विरुद्ध जयपुर भेजने के मामले की जांच विचाराधीन है। इस संबंध में मुख्यालय द्वारा रिकॉर्ड मांगा गया था।

ऑडिट शाखा में कार्यरत कार्मिक इन्द्रपाल कौर ने नोटशीट के जरिए बताया कि तत्कालीन ट्रैफिक मैनेजर नरेंद्रपाल सिंह राणा ने 15 दिसंबर 2024 को रविवार के अवकाश के दिन रिपोर्ट भेजने का कहकर उससे चाबी मंगवाकर वाहनों की समस्त डेटा स्टेशनरी निकाल ली। बार-बार मौखिक रूप से कहने के बावजूद नरेंद्रपालसिंह राणा ने दस्तावेज वापस कार्यालय में जमा नहीं करवाए। नरेन्द्रपालसिंह राणा ने सरकारी रिकॉर्ड को ही गायब कर दिया। यह मामला वर्ष 2023 का है।

- ट्रैफिक मैनेजर नरेंद्रपाल राणा के खिलाफ कोतवाली थाने में केस दर्ज कराया है

डेरा सच्चा सौदा सिरसा को जयपुर में सत्संग के दौरान रोडवेज की बसें बुक कीं। नियमानुसार ये बसें कॉन्ट्रेक्ट कैरिज के प्रति किलोमीटर के रेटों पर जानी चाहिए थीं जोकि रूटीन रूट प्रति किमी से अधिक रेट थे। लेकिन श्रीगंगानगर आगार के तत्कालीन मुख्य प्रबंधक दीपक भोभिया (वर्तमान में बारां आगार प्रबंधक) तथा ट्रैफिक मैनेजर नरेंद्रपालसिंह राणा (वर्तमान में सहायक प्रशासनिक अधिकारी निलंबित और नागौर पदस्थापित) ने मिलकर डेरे की ओर से एकमुश्त रकम लेकर जेब में रख ली।

इन्होंने 34 बसें 30 सितंबर 2023 को जयपुर भेजीं। ये बसें 2 अक्टूबर 2023 को वापस पहुंचीं। सभी के परिचालकों से श्रीगंगानगर से जयपुर की टिकटें कटवाकर रिकॉर्ड में रख लीं। परिचालकों को यह बताया ही नहीं गया कि उक्त बसों के कॉन्ट्रेक्ट कैरिज का किराया लिया जा चुका है। इसमें कॉन्ट्रेक्ट कैरिज और रूट के रेट में 8 लाख रुपए का अंतर था। यह रकम दोनों ने गबन कर ली। इसकी शिकायत हुई। रोडवेज सूत्रों के अनुसार मामले की शिकायत होते ही ट्रैफिक मैनेजर नरेंद्रपाल राणा ने 15 दिसंबर 2024 को सबसे पहले टिकटों का रिकॉर्ड गायब किया। हालांकि इसके बाद उसका प्रमोशन भी हो गया और अब वह सहायक प्रशासनिक अधिकारी है। गबन की जांच को एक ऑडिट टीम 30 दिसंबर को ही जिला मुख्यालय से जांच पूरी करके जयपुर लौटी है। आरोपी राणा द्वारा रिकॉर्ड गायब करने के बाद अब उनको अनूपगढ़ में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत से 9 अक्टूबर को निलंबित करके नागौर आगार मुख्यालय लगाया गया है।

साथ ही सरकारी रिकॉर्ड चोरी करने या खुर्दबुर्द करने के आरोप में केस दर्ज करवाया गया है। ऑडिट रिपोर्ट मुख्यालय को प्रस्तुत की जा चुकी है। संभावना है कि अक्टूबर माह में ही मुख्यालय जांच रिपोर्ट के आधार पर भी कार्रवाई कर देगा।

भाजपा नेता की पिटाई मामले में एएसआई और कांस्टेबल लाइन हाजिर

जोधपुर, (कासं)। बीजेपी के शासन में ही बीजेपी कू एक नेता की पुलिस द्वारा पिटाई का मामला सामने आया है। इस मामले में एक एएसआई और कांस्टेबल को पुलिस लाइन हाजिर कर दिया गया है। मामला भोपालगढ़ थाने का है।

भोपालगढ़ थाने में भाजपा के मंडल महामंत्री को रातभर बंद रख मारपीट की गई। बीजेपी जिलाध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी ठामीण एसपी कार्यालय पहुंच गए। यहां उन्होंने एडीसीपी के सामने विरोध जताया। विवाद बढ़ता देख पिटाई करने के आरोप में एएसआई गोविंदराम और कॉन्स्टेबल दिलीप को भोपालगढ़ थाने से ठामीण पुलिस लाइन हाजिर कर दिया गया। इधर इस विरोध से जुड़ा वीडियो भी सामने आया है, जिसमें भाजपा देहात जिलाध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी एडीसीपी भोपालसिंह लखावत से पुलिस की कार्यप्रणाली के खिलाफ रोष जताते हुए नजर आए। गुस्साए जिलाध्यक्ष ने यहां तक बोल दिया कि हमारी सरकार है और आप हमारे ही पदाधिकारी को पीट रहे हो, ऐसा नहीं चलेगा। मैं इसको लेकर सीएम, डीजीपी को भी शिकायत करूंगा। यदि आपने एक्शन नहीं लिया तो मैं अपने हिसाब से कार्रवाई कराऊंगा।

सार-समाचार

राजकार्य में बाधा डालने का मामला दर्ज कराया

रुदावल भरतपुर (निस)। रूदावल कस्बे में शनिवार को ट्रेलर के चपेट में आने से विवाहिता की मौत के बाद मृतका के परिजनों एवं ठामीणों ने की पुलिस से हाथापाई कर ट्रेलर में तोड़फोड़ कर दी। परिजनों एवं ठामीणों ने पुलिस की ओर से पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में रखे शव को जबरन निकाल कर सडक पर रखकर शव को अपमानित किया गया। घटना को लेकर रूदावल थाना के ड्यूटी ऑफिसर भरत लाल की ओर से 19 नामजद लोगों सहित 100-150 लोगों के खिलाफ राजकार्य में बाधा डालने एवं पुलिस के साथ धक्का-मुक्की करने एवं राजमार्ग को जाम करने का मामला दर्ज कराया है। रूदावल थाना पुलिस के सहायक उप निरीक्षक भरत लाल की ओर से दर्ज कराए मामले में बताया है कि पुलिस को सूचना मिली थी कि बस स्टेण्ड पेट्रोल पंप के सामने एक ट्रेलर के चालक ने तेज गति व लापरवाही से ट्रेलर को चलाकर एक अपाचे मोटरसाईकिल को टक्कर मार दी है। जिससे मोटरसाईकिल पर पीछे बैठी सवारी मालती पत्नि सत्येन्द्र प्रजापति निवासी सायपुर की मौत हो गई है। सूचना पर पुलिस जाप्ता मौके पर पहुंचा तो मृतका के परिजन एवं ठामीणों ने राजमार्ग को जाम कर दिया। राजमार्ग को जाम करने वालों को नेतृत्व गोविन्द गुर्जर निवासी रानपुर कर रहा था। इन लोगों में भूपेन्द्र, राजेन्द्र, बनय सिंह, महेश, रघु शर्मा, सीता प्रजापत, राहुल शर्मा, पवन, विष्णु प्रजापत, नीरू, बिजेन्द्र, लाखन, जगन्नाथ, लेखराज, हरोम प्रजापत, महावीर, महेश, रतन, गोविन्द गुर्जर सहित 100-150 लोग शामिल थे। पुलिस जाप्ता ने घटना करने वाले ट्रेलर को लाने का प्रयास किया तो इन लोगों ने पुलिस के साथ गाली गलौच करते हुए भयोपरत किया एवं राजकार्य में बाधा डाली गई। इन लोगों की ओर से मोर्चरी से शव को निकालकर सडक पर रखकर शव का भी अपमान किया। जब पुलिस ने इन लोगों को रोका तो नामजद सहित अन्य लोगों ने पुलिस से धक्का-मुक्की की गई।

भाजपा नेता की पिटाई मामले में एएसआई और कांस्टेबल लाइन हाजिर

जोधपुर, (कासं)। बीजेपी के शासन में ही बीजेपी कू एक नेता की पुलिस द्वारा पिटाई का मामला सामने आया है। इस मामले में एक एएसआई और कांस्टेबल को पुलिस लाइन हाजिर कर दिया गया है। मामला भोपालगढ़ थाने का है। भोपालगढ़ थाने में भाजपा के मंडल महामंत्री को रातभर बंद रख मारपीट की गई। बीजेपी जिलाध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी ठामीण एसपी कार्यालय पहुंच गए। यहां उन्होंने एडीसीपी के सामने विरोध जताया। विवाद बढ़ता देख पिटाई करने के आरोप में एएसआई गोविंदराम और कॉन्स्टेबल दिलीप को भोपालगढ़ थाने से ठामीण पुलिस लाइन हाजिर कर दिया गया। इधर इस विरोध से जुड़ा वीडियो भी सामने आया है, जिसमें भाजपा देहात जिलाध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी एडीसीपी भोपालसिंह लखावत से पुलिस की कार्यप्रणाली के खिलाफ रोष जताते हुए नजर आए। गुस्साए जिलाध्यक्ष ने यहां तक बोल दिया कि हमारी सरकार है और आप हमारे ही पदाधिकारी को पीट रहे हो, ऐसा नहीं चलेगा। मैं इसको लेकर सीएम, डीजीपी को भी शिकायत करूंगा। यदि आपने एक्शन नहीं लिया तो मैं अपने हिसाब से कार्रवाई कराऊंगा। उन्होंने कहा कि जिन पुलिसकर्मियों ने उनकी पार्टी के पदाधिकारी के साथ मारपीट की है, उसे सामने लाया जाना चाहिए। उसके खिलाफ कार्रवाई हो। उसे किस अपराध में थाने लाकर बंद किया गया। क्या वो कोई हिस्ट्रीशीटर है जो पुलिस पकड़कर थाने लाई। जिलाध्यक्ष भाटी ने कहा कि रातभर उनके मंडल के पदाधिकारी के साथ थाने में मारपीट की गई। उनके शरीर पर कई जगहों पर निशान है। जबकि पुलिस थाना भोपालगढ़ के थाना अधिकारी बोल रहे हैं उन्हें पता ही नहीं, ये कैसे संभव है। जिलाध्यक्ष ने आरोप लगाया कि पुलिस जानबूझकर भाजपा के पदाधिकारियों को टारगेट कर रही है। उन्होंने इस मामले में आगे उच्च स्तर पर शिकायत करने की भी बात कही। बताया जा रहा है कि जिस पदाधिकारी के साथ मारपीट हुई उसका नाम हेमंत शर्मा है, जो भोपालगढ़ मंडल के महामंत्री हैं। आरोप है की पुलिस ने झूठी गिरफ्तारी कर उन्हें शांति भंग की धाराओं में गिरफ्तार किया और रात को पुलिस एएसआई और दो सिपाही ने मिलकर मारपीट की। इसका पता चलने के बाद भाजपा देहात जिला अध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी ने भोपालगढ़ पुलिस थाने जाकर विरोध जताया।

भीलवाड़ा यूआईटी भूखंड लॉटरी विवाद : विधायक कोठारी ने उठाई निष्पक्ष जांच की मांग

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा नगर विकास न्यास (यूआईटी) द्वारा हाल ही में आयोजित 3081 भूखंडों की ई-लॉटरी प्रक्रिया अब विवादों के घेरे में आ गई है। भीलवाड़ा विधायक अशोक कुमार कोठारी ने इस पूरी प्रक्रिया की प्रामाणिकता को लेकर भीलवाड़ा के जनमानस में व्याप्त असंतोष का हवाला देते हुए राजस्थान सरकार के नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा को एक पत्र लिखा है। विधायक कोठारी ने जनहित में इस पूरी लॉटरी की उच्चस्तरीय कमेटी से निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है ताकि पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके और किसी भी दोषी व्यक्ति या अधिकारी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जा सके। विधायक कोठारी ने 18 अक्टूबर 25 को मंत्री खर्रा को लिखे अपने पत्र में कहा है कि हमारी सरकार का मूल मंत्र "सभी का साथ - सभी का विकास" है और शासन व्यवस्था को पारदर्शी बनाए रखना प्राथमिकता है।उन्होंने मंत्री खर्रा के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि गत बजट घोषणा के अनुरूप भीलवाड़ा यूआईटी ने 3081 भूखंडों की लॉटरी 16 अक्टूबर 25 को नगर निगम सभागार में आयोजित की थी।विधायक ने पत्र में लॉटरी से जुड़े चौंकाने वाले आंकड़े भी प्रस्तुत किए। लॉटरी हेतु यूआईटी ने करीब 92,414 फॉर्म विक्रय किए थे, जिसमें से 90,359 आवेदन पत्र जमा हुए। न्यास ने जांच के बाद 1549 आवेदन पत्रों को निरस्त किया, जबकि जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) को उपलब्ध कराए गए डेटा में से जेडीए ने एक ही स्कीम में एक ही आधार पर किए गए एक से अधिक आवेदनों के कारण 571 और आवेदन निरस्त किए। अंततः 88,239 आवेदन लॉटरी में शामिल हुए, जबकि भूखंड केवल 3081 थे।विधायक कोठारी ने स्पष्ट शब्दों में कहा की "लॉटरी उपरांत प्रक्रिया की प्रामाणिकता को लेकर भीलवाड़ा के जनमानस में असंतोष है।" और यह विषय जनहितार्थ और बड़ी संख्या में लोगों की भावनाओं से जुड़ा है, इसलिए इसकी विश्वसनीयता बहाल करना आवश्यक है। पत्र में विधायक कोठारी ने स्वायत शासन मंत्री से पुरजोर आठाह किया है कि भीलवाड़ा यूआईटी द्वारा आयोजित इस लॉटरी की निष्पक्ष जांच एक उच्चस्तरीय कमेटी से कराई जाए। उन्होंने तर्क दिया है कि जांच के बाद यदि कोई भी व्यक्ति या अधिकारी लॉटरी प्रक्रिया में दोषी पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही सुनिश्चित की जानी चाहिए। विधायक कोठारी की इस पहल से भीलवाड़ा के हजारों भूखंड आवेदकों की चिंताओं को सीधे सरकार तक पहुंचाने का प्रयास है, जिससे भूखंड आवंटन प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता आ सके।

- जनमानस में असंतोष को लेकर मंत्री खर्रा को लिखा पत्र

मोबाइल फोन ढूंडकर उनके मालिकों को लौटाया

करौली । करौली में दीपावली के पांच दिवसीय महापर्व को शांति और सुरक्षा के साथ मनाने की तैयारियों के तहत शनिवार को करौली कोतवाली में नागरिक संपर्क समूह (सीएलजी) की बैठक हुई। इसमें शहर की शांति व्यवस्था, सुरक्षा और यातायात प्रबंधन पर चर्चा की गई। बैठक में यातायात व्यवस्था को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। दीपोत्सव के दौरान शहर के परकोटे के अंदर चार पहिया और तिपहिया वाहनों के प्रवेश पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। यह फैसला भीड़भाड़ को नियंत्रित करने और आवाजाही को सुगम बनाने के उद्देश्य से लिया गया है। सीएलजी बैठक के बाद करौली पुलिस ने एक सराहनीय कार्य किया। पुलिस ने विभिन्न स्थानों पर खोए हुए 45 मोबाइल फोन ढूंढकर उनके असली मालिकों को लौटाए। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) गुमनाराम ने कहा कि पुलिस का मुख्य लक्ष्य जिले में शांति कायम करना है।

बीजेपी के पूर्व मंत्री की बेटी के घर हमला

पति, बेटे-बहू को लाठी-डंडों से पीटा, पिस्टल तानी

श्रीगंगानगर । यहां भाजपा नेता और पूर्व मंत्री सुरेंद्र पाल सिंह टीटी की बेटी के घर बदमाशों ने हमला कर दिया। हमलावर फर्जी पुलिसवाले बनकर घुर में घुसे और टीटी के दामाद गुरुचरण रमाना और उनके बेटे-बहू के साथ मारपीट की।

लाठी-डंडों से हमले के बाद आरोपियों ने परिवार पर पिस्टल भी तान दी। घटना देर रात करीब 10.30 बजे केसरीसिंहपुर थाना इलाके के 42 जीजी गांव की है। हमले की जानकारी के बाद 5 थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। हालांकि, रविवार सुबह तक आरोपियों का सुराग नहीं मिला था। घटना का आज सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। एसपी अमृता दुहन ने बताया- व्यापारी गुरुचरण रमाना के घर शनिवार रात अज्ञात हमलावर घुसे थे। उन्होंने खुद को पुलिसकर्मी बताया था।

- घटना देर रात करीब 10.30 बजे केसरीसिंहपुर थाना इलाके के 42 जीजी गांव की है। हमले की जानकारी के बाद 5 थानों की पुलिस मौके पर पहुंची।

पुलिस के अनुसार व्यापारी गुरुचरण सिंह रमाना श्रीगंगानगर से अपने गांव लौट रहे थे। घर पहुंचने पर उनके पीछे पुलिस की वर्दी पहने 2 युवक भी आ गए। युवकों ने रमाना से बातचीत करने का अनुरोध किया और उन्हें घर की बैठक में चलने को कहा। जैसे ही व्यापारी ने बैठक का दरवाजा खोला, दोनों युवक अंदर आते ही उनसे मारपीट करने लगे। इसके बाद 4-5 अन्य बदमाश भी घर में घुस आए। उन्होंने रमाना के बेटे-बहू के साथ भी मारपीट की। बदमाशों ने गुरुचरण सिंह रमाना के साथ मारपीट की और घर में लगे सीसीटीवी कैमरों को भी तोड़ दिया। बदमाशों ने व्यापारी से बार-बार सीसीटीवी कैमरों का डीवीआर मांगा, लेकिन रमाना ने उन्हें कोई जानकारी नहीं दी और शोर मचाया। बदमाशों ने व्यापारी की बहू पर भी हमला किया।

उसने एक कमरे में जाकर खुद को बंद कर परिचितों को फोन करने की कोशिश की, लेकिन बदमाशों ने कमरे का दरवाजा तोड़ दिया और उनके तथा उनके बेटे के मोबाइल फोन छीन लिए। शोर सुनकर घर की छत पर सो रहा परिवार नीचे आया। डीवीआर नहीं मिलने पर बदमाश मोबाइल फोन लेकर फरार हो गए। एसपी अमृता दुहन ने बताया कि घटना के बाद 5 थानों की पुलिस श्रीगंगानगर कोतवाली, श्रीकरणपुर, पदमपुर, केसरीसिंहपुर और गजसिंहपुर पुलिस मौके पर पहुंची है। हालांकि, घर में लूट की कोई बड़ी घटना नहीं हुई है। सभी आरोपी अज्ञात थे। जिनकी तलाश की जा रही है।

ओवरब्रिज का काम अगले सप्ताह से

बूंदी। एनएच-52 तालेड़ा से हिंडौली के बीच 4 कट पर ओवरब्रिज निर्माण के वर्क ऑर्डर जारी कर दिए गए हैं। करीब 175 करोड़ की लागत आएगी। एक साल में बनाकर तैयार कर लिया जाएगा। एनएचएआई ने पिछले महीने टेंडर प्रक्रिया पूरी की थी।

ओवरब्रिज व सर्विस रोड बनने से दुर्घटनाओं में कमी आएगी। एनएच-52 पर कोटा की तरफ वाले कट पर, बरूधन चौराहे, रामगंजबालाजी व अशोक नगर चमन चौराहे वाले कट पर ओवरब्रिज निर्माण करेगा। इसके अलावा बेसखा स्थित कट से कांची घाटी तक, सिलोर रोड पुलिया से रेलवे स्टेशन पुलिया तक व तालेड़ा बूंदी वाले कट पर भी सर्विस रोड निर्माण होगा। तालेड़ा में कोटा की ओर मौजूद कट जहां ओवर ब्रिज बनना है।

ओवरब्रिज बनने से यहां पर होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी। इसके अलावा बरूधन चौराहे, रामगंजबालाजी व अशोक नगर के पास एक्सीडेंटल पॉइंट बने हुए हैं। यहां 3 साल में करीब 20 बड़े हादसे हो चुके हैं। इनमें 18 लोगों की जान जा चुकी। इसी तरह हिंडौली से चैनपुरिया, जहाजपुर जाने व आने वाले लोगों को सर्विस रोड नहीं होने से गलत दिशा में चलना पड़ता है।

- एनएच-52 तालेड़ा से हिंडौली के बीच 4 कट पर ओवरब्रिज निर्माण के वर्क ऑर्डर जारी कर दिए गए हैं।

यहां महीनेभर में 3-4 एक्सीडेंट होते हैं। सर्विस रोड बनने से वाहन चालकों का सुगमता होगी। वहीं बूंदी सिलोर रोड चौराहे से रेलवे स्टेशन तक व तालेड़ा में बूंदी वाले कट पर सर्विस रोड के निर्माण होगा।

इन कटों पर ओवरब्रिज बनाने के लिए एनएचएआई की कोटा यूनिट ने एक साल पहले प्रस्ताव भेजा था। इसके बाद स्वीकृति आने पर इसी साल इनकी डीपीआर तैयार कर टेंडर प्रक्रिया शुरू की थी। वर्क ऑर्डर जारी किए हैं। अगले 1-2 हफ्ते में काम शुरू हो जएगा।

जिलों को शीघ्र मिलेंगे कांग्रेस अध्यक्ष

करौली (निंसं.)(फोटो-पी-1) राजस्थान में कांठोस ने आगामी चुनावों के मद्देनजर संगठनात्मक गतिविधियां तेज कर दी हैं। पार्टी 2028 के विधानसभा और 2029 के लोकसभा चुनावों को लक्ष्य बनाकर जिलों में अपने ढांचे को मजबूत करने में जुटी है। इसी क्रम में करौली में एक महत्वपूर्ण बैठक की गई, जिसमें प्रदेश स्तर के पर्यवेक्षक और वरिष्ठ नेता शामिल हुए। करौली में एआईसीसी पर्यवेक्षक नदीम जावेद ने बताया कि संगठन को मजबूत करने के लिए सृजन अभियान चल रहा है। उन्होंने घोषणा की कि जल्द ही जिलों को नए अध्यक्ष मिलेंगे। जावेद ने कहा कि पार्टी का मुख्य फोकस 2028 के विधानसभा और 2029 के लोकसभा चुनावों पर है।पर्यवेक्षक नदीम जावेद के अनुसार, भाजपा की नीतियों और 'वोट चोरी' के मामलों को लेकर आमजन में रोष है। इसी आधार पर कांठोस आगामी चुनावों में राज्य और केंद्र दोनों जगह सरकार बनाने का दावा कर रही है।जावेद ने जानकारी दी कि संगठन सृजन अभियान के तहत जिले की प्रत्येक विधानसभा में बैठकें आयोजित की गईं। इस दौरान कांठोस जिला अध्यक्ष पद के लिए 50 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं।

फेकें नहीं हमें दें , ई-रिक्शा रैली माध्यम से आमजन को दिया संदेश

भरतपुर (निस)। बाल अधिकारिता विभाग द्वारा नवजात शिशुओं को फेकें नहीं हमें दें का ई-रिक्शा रैली के माध्यम से भरतपुर शहर में जन जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

- बाल अधिकारिता विभाग द्वारा नवजात शिशुओं को फेकें नहीं हमें दें का ई-रिक्शा रैली के माध्यम से भरतपुर शहर में जन जागरूकता अभियान का आयोजन किया

बाल अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक अमित अवस्थी ने बताया कि जिला बाल संरक्षण इकाई एवं बाल अधिकारिता विभाग के कार्यालय राजेन्द्र नगर, भरतपुर से बाजार के मुख्य मार्गों से नवजात शिशुओं को लावारिस अवस्था में फेकें नहीं हमें दें के बारे में लागों को जागरूक करने के लिए वरिष्ट सहायक दुर्गेश पचौरी ने ई-रिक्शा रैली का हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रैली के माध्यम से आमजन से अपील की गई कि नवजात शिशुओं को फेंकने की बजाय गोपनीय तरीके से सरकार द्वारा संचालित पालना गृह जनाना हॉस्पीटल मोरी चार बाग, भरतपुर एवं नारी निकेतन परिसर में छोडने के लिए लोगों को जानकारी प्रदान की गई। शिशु को पालना गृह में छोडने वाले व्यक्ति की पहचान गुप्त रखी जाएगी। लावारिस नवजात शिशु की देखरेख एवं सुरक्षा सरकार द्वारा की जाएगी। रैली के माध्यम से लोगों को बताया कि कोई भी व्यक्ति किसी भी बच्चें को कानूनी तरीके से गोद ले सकता है। अगर किसी भी व्यक्ति को कहीं पर भी कोई लावारिस, अनाथ, बेसहारा बच्चा मिले तो इसकी सूचना चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 एवं पुलिस कंट्रोल रूम 100/112 पर दे सकते हैं. इस दौरान बाल अधिकारिता विभाग के विकास चतुर्वेदी एवं चाइल्ड हेल्पलाइन के कॉर्डिनेटर प्रेमराज परनामी तथा चाईल्ड हैल्पलाईन के समस्त कर्मचारी उपस्थित थे।

बाल अधिकारिता विभाग द्वारा नवजात शिशुओं को फेकें नहीं हमें दें का ई-रिक्शा रैली के माध्यम से भरतपुर शहर में जन जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

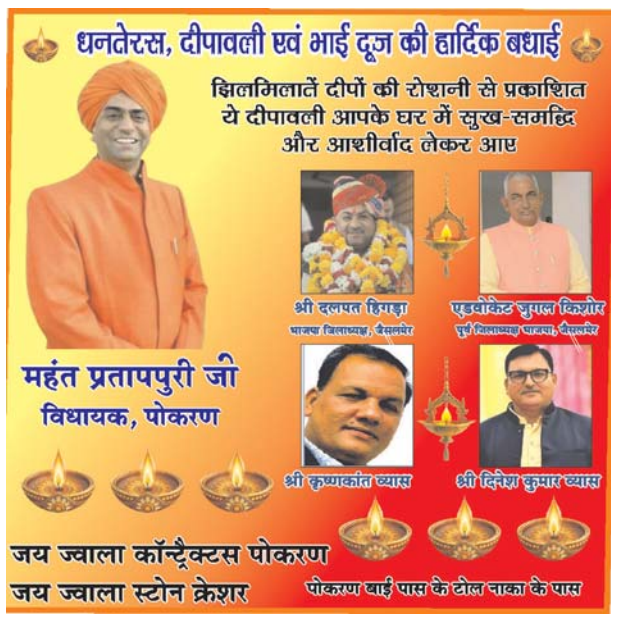

मिलावट के खिलाफ कार्रवाई

बाड़मेर, (नि.सं.)। शुद्ध आहार मिलावट पर वार दीपावली विशेष अभियान में कार्यवाही जारी रखते हुए बाड़मेर मुख्यालय पर नमूने लिए गए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ विष्णु राम बिश्नोई ने बताया कि शुद्ध आहार मिलावट पर वार दीपावली विशेष अभियान में लगातार कार्यवाही जारी रखते हुए आज रविवार को भी खाद्य सुरक्षा अधिकारी राजेश कुमार जांगिड़ द्वारा फर्म जीवन मिष्ठान भंडार से खाद्य पदार्थ मावा पेड़ा मिठाई, गुलाब जामुन मिठाई बेसन की बर्फी और फर्म माधव स्वीट होम से खाद्य पदार्थ मिठाई मावा बर्फ और फर्म जैन केटर्स से मिठाई मावा बर्फी आदि के नमूने लिए गए।

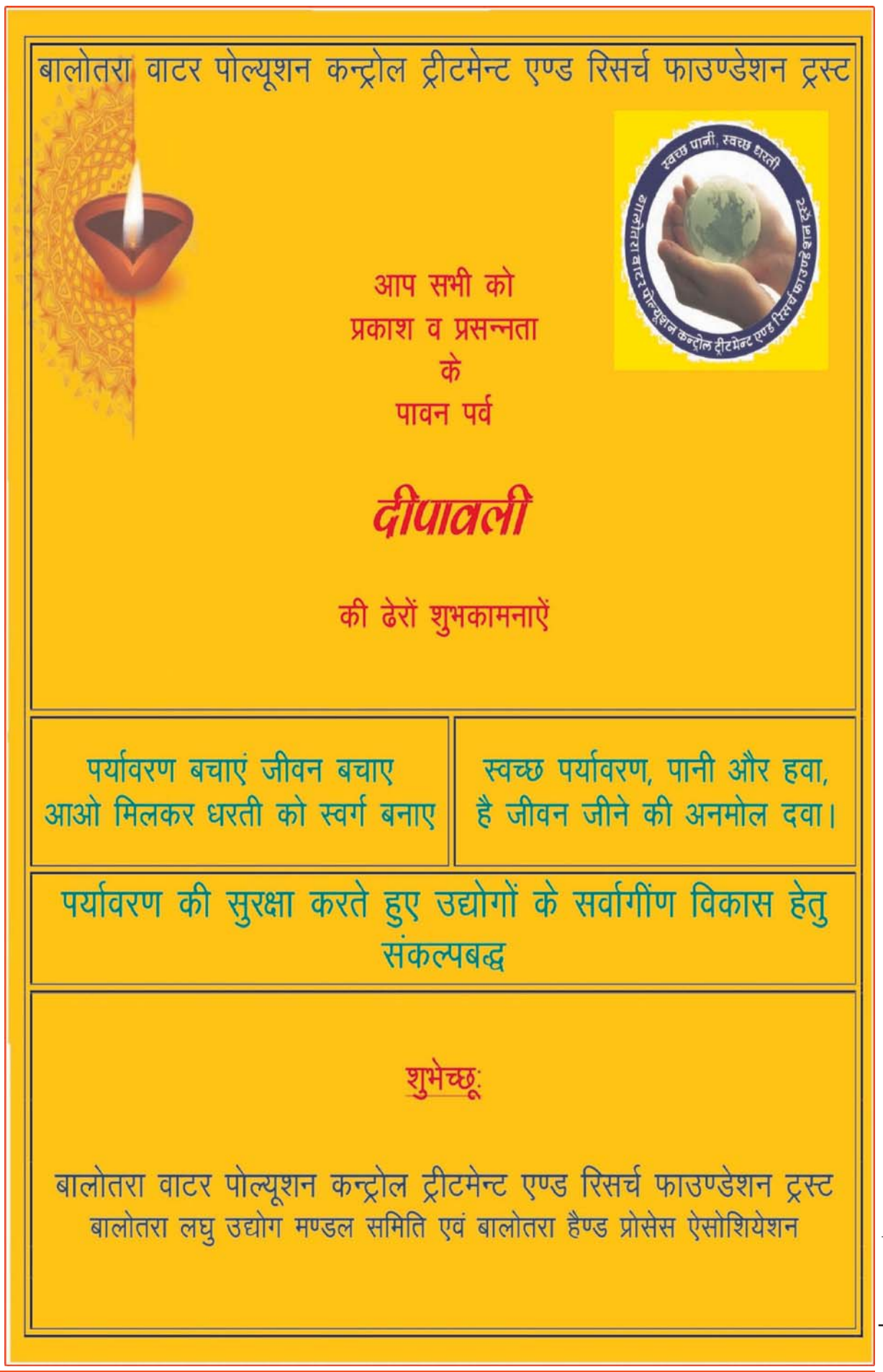

स्मृति मंधाना जल्दी इंदौर की बहू बनेंगी। उनके इस बयान के बाद ये खबर पूरी तरह से फैल गई है।रिलेशनशिप कन्फर्म हो गया है।
- पलाश मुच्छल

मंधाना मंगेतर, शादी को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — मिचेल स्टार्क

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने भारत और ऑस्ट्रेलिया वनडे सीरीज की पहली ही गेंद पर वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया? उन्होंने मैच का पहला ओवर डाला, जिसमें पहली गेंद उन्होंने रोहित शर्मा को डाली। मीटर में इस गेंद की गति देखकर सभी हैरान रह गए। इस गेंद की गति 176.5 किमी प्रति घंटे की दिखाई गई, जो शोएब अख्तर के वर्ल्ड रिकॉर्ड से भी तेज गेंद है। मिचेल स्टार्क ने रोहित शर्मा को 176.5 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद डाली जो शोएब अख्तर के वर्ल्ड रिकॉर्ड से भी ज्यादा है। दरअसल, ये सच्चाई नहीं है क्योंकि ये गलती से हुआ है।

क्या आप जानते हैं ?... ऑस्ट्रेलिया है क्रिकेट का डॉन, ढाई करोड़ की आबादी, फिर भी जीते 27 आईसीसी खिताब।

मेसी की हैट्रिक के साथ मियामी ने नेशविले को हराया

वाशिंगटन, 19 अक्टूबर। लियोनेल मेसी की हैट्रिक की बदौलत इंटर मियामी ने शनिवार को नैशविले पर एक गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए एमएलएस के मैच में 5-2 से जीत हासिल की। मेसी ने जोर्डी अल्बा के पास को अपनी छाती से नियंत्रित करके और दो डिफेंडरों को छकाते हुए गोल करके स्कोरिंग की शुरुआत की, फिर 20 गज की दूरी से एक शॉट गोलकीपर जो विलिस के नजदीकी पोस्ट पर छकाकर गोल किया। हनी मुख्तार के क्रॉस पर सैम सुरिज ने हेडर से बराबरी का गोल दागा और फिर मुख्तार के प्रयास के पोस्ट से रिबाउंड होने पर जैकब शैफेलबर्ग ने गोल कर दिया। एंडी नजर के हैंडबॉल पर मेसी द्वारा पेनल्टी मिलने के बाद हाफटाइम के तुरंत बाद मेहमान टीम बराबरी पर आ गई।

सात्विक-चिराग को सेमीफाइनल में मिली हार

ओडेंस (डेनमार्क), 19 अक्टूबर। भारतीय जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी को डेनमार्क ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष युगल वर्ग में सेमीफाइनल में जापान की ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी की जोड़ी से हार का सामना करना पड़ा। शनिवार को 68 मिनट तक चले मुकाबले में सात्विक-चिराग की जोड़ी जापान की ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी की जोड़ी से 23-21, 18-21, 21-16 से हार गई। 2021 के विश्व चैंपियन और 2019 के रजत पदक विजेता ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी ने मुकाबले की शानदार शुरुआत की और पहले गेम में 11-6 की बढ़त बना ली। विश्व बैडमिंटन रैंकिंग में छठे स्थान पर काबिज सात्विक और चिराग ने वापसी करते हुए स्कोर 20-20 से बराबर किया, लेकिन जापानी जोड़ी ने दबाव में शानदार प्रदर्शन करते हुए पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम में भारतीय जोड़ी ने आक्रामक शुरुआत की और बीच में चार अंकों की बढ़त बना ली। ताकुरो और कोबायाशी ने कोशिश की लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने यह गेम जीतकर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया। निर्णायक गेम में दोनों टीमों ने जोरदार मुकाबला किया। भारत ने एक समय चार लगातार अंक लेकर बढ़त बनाई थी, लेकिन जापानी जोड़ी ने वापसी करते हुए जीत अपने नाम की। यह भारतीय जोड़ी पर उनकी छह मुकाबलों में दूसरी जीत थी। यह भारतीय जोड़ी की इस सीजन बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर पर छठी सेमीफाइनल हार थी। इससे पहले चीन, सिंगापुर, इंडिया और मलेशिया ओपन के साथ-साथ बीडब्ल्यूएफ विश्व चैंपियनशिप में भी अंतिम चार में हार का सामना करना पड़ा था। इस हार के साथ भारत का डेनमार्क ओपन 2025 अभियान समाप्त हो गया।

रोहित, विराट सस्ते में लुढ़के, भारत पहले वनडे में हारा

पर्थ, 19 अक्टूबर। स्टार बल्लेबाजों रोहित शर्मा और विराट कोहली की बहुचर्चित वापसी फ्लॉप रही और भारत को रविवार वर्षा प्रभावित पहले एकदिवसीय मैच में ऑस्ट्रेलिया के हाथों सात विकेट से हार का सामना करना पड़ा।

भारत ने केएल राहुल (38), अक्षर पटेल (31) और नीतीश कुमार रेड्डी (नाबाद 19) की शानदार बल्लेबाजी के दम पर निर्धारित 26 ओवर में नौ विकेट पर 136 रन बनाये, लेकिन डकवर्थ लुईस निमय के तहत ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 131 रनों का लक्ष्य मिला।

ऑस्ट्रेलिया ने 21.1 ओवर में तीन विकेट पर 131 रन बनाकर जीत हासिल की और तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कप्तान मिचेल मार्श ने शानदार पारी खेलते हुए 52 गेंदों पर दो चौकों और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 46 रन की मैच विजयी पारी खेली। उन्होंने मैट रेनशॉ के साथ चौथे विकेट की अविजित साझेदारी में नाबाद 32 रन जोड़े।

मैट रेनशॉ ने 24 गेंदों पर एक चौके और एक छक्के की मदद से नाबाद 21 रन बनाये। जॉश फिलिपे ने 29 गेंदों में तीन चौकों और दो छक्कों की मदद से 37 रन का योगदान दिया। ट्रेविस हेड और मैथ्यू शार्ट आठ-आठ रन बनाकर आउट हुये। भारत की तरफ से अर्शदीप सिंह, अक्षर पटेल और वॉशिंगटन सुंदर ने एक-एक विकेट लिया।

बारिश से प्रभावित मैच में ऑस्ट्रेलिया पूरी तरह से भारत पर हावी रहा। पहले भारत को 26 ओवर के मैच में 136 पर रोका और उन्हें डीएलएस प्रणाली के हिसाब से 131 का लक्ष्य मिला। हेड और शॉर्ट के रूप में ऑस्ट्रेलिया को शुरुआती झटके लगे लेकिन कप्तान मिचेल मार्श अंत तक डटे रहे और फ़िलिपे और फिर रेनशॉ के साथ साझेदारी करते हुए ऑस्ट्रेलिया का बेड़ा पार कर दिया। ऑप्टस स्टेडियम पर यह ऑस्ट्रेलिया की पहली जीत भी है।

इससे पहले आज यहां टॉस हारने के बाद बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने चौथे ओवर की चौथी गेंद पर रोहित शर्मा (आठ) का विकेट गंवा दिया। उन्हें जॉश हेजलवुड ने मैट रेनशॉ के हाथों कैच आउट कराया। उसके बाद सातवें ओवर की पहली गेंद पर मिचेल स्टार्क ने विराट कोहली को बिना खाता खोले ही पवेलियन भेज दिया। कप्तान शुभमन गिल (10) रन बनाकर आउट हुये। एक समय भारत ने 25 के स्कोर पर अपने तीन विकेट गंवा दिये थे। उसके बाद 37 के स्कोर पर बारिश शुरु हो गई और खेल को रोकना पड़ा। बारिश रुकने के बाद मैच को 26 ओवरों का कर दिया गया। इस दौरान अक्षर पटेल और केएल राहुल ने पारी को संभालने का प्रयास किया। दोनों बल्लेबाजों ने चौथे विकेट लिए 39 रन जोड़े।

20वें ओवर की आखिरी गेंद पर मैथ्यू कुनमन ने अक्षर पटेल को आउट कर इस साझेदारी का अंत किया। अक्षर पटेल ने 38 गेंदों में तीन चौकों की मदद से 31 रन बनाये। वॉशिंगटन सुंदर (11) को भी कुनमन ने आउट किया। इसके बाद तेजी से रन बनाने के प्रयास में भारतीय बल्लेबाज विकेट गंवाते चले गये। भारत ने 26 ओवर में नौ विकेट पर 136 का स्कोर बनाया। नीतीश कुमार रेड्डी 11 गेंदों में दो छक्कों की मदद से 19 रन बनाकर नाबाद रहे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से जॉश हेजलवुड, मैथ्यू कुनमन और मिचेल ओवेन ने दो-दो विकेट लिये। मिचेल स्टार्क और नेथन एलिस ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

पॉवरप्ले में तीन विकेट गंवाने के बाद वापसी करना मुश्किल होता है : गिल

पर्थ, 19 अक्टूबर। भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने ऑस्ट्रेलिया से पहला वनडे रविवार को सात विकेट से हारने के बाद कहा कि पॉवरप्ले में तीन विकेट गंवाने के बाद वापसी करना मुश्किल होता है।

शुभमन गिल ने मैच के बाद प्रेजेंटेशन में कहा, पावरप्ले में तीन विकेट गंवाना कभी भी आसान नहीं होता, आप हमेशा बराबरी का खेल खेलने की कोशिश करते हैं। इस मैच से बहुत कुछ सीखने को मिला और कई सकारात्मक बातें भी। 131 रनों का बचाव करते हुए, हम मैच को काफी आगे तक ले गए और इससे हम बहुत संतुष्ट हैं। हम बहुत खुशकिस्मत हैं कि हम जहां भी खेलते हैं, दर्शक बड़ी संख्या में आते हैं। प्लेयर ऑफ द मैच मिचेल मार्श ने कहा, आज मौसम ने अपना असर दिखाया। सभी दर्शकों का बहुत-बहुत शुक्रिया जो मैदान पर डटे रहे। मुझे पता है कि ये दिन वाकई निराशाजनक हो सकते हैं, लेकिन जीत हासिल करना अच्छा लगता है। घर में जीतना हमेशा अच्छा लगता है। मुझे ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलना बहुत पसंद है। (रन-चेज पर) थोड़ा उतार-चढ़ाव भरा था। हम जानते थे कि दोनों टीमों के लिए यही स्थिति रहने वाली है, इसलिए वहां से जीतना थोड़ा चुनौतीपूर्ण था। जिस तरह से हमारे युवा खिलाड़ी मैदान पर उतरे और मैच को संभाला और हमें जीत दिलाई, उस पर मुझे गर्व है। (जोश फिलिप) मैदान पर आए और उन्होंने इसे बहुत आसान बना दिया, है ना? युवा खिलाड़ियों का मैदान पर आना मज़ेदार होता है। जरूरी नहीं कि वे युवा ही हों, बल्कि युवा खिलाड़ी मैदान पर आ रहे हैं। आप बस यही चाहते हैं कि वे मज़े करें और इसका आनंद लें। वनडे क्रिकेट में, हमें हर समय बड़ी भीड़ के सामने खेलने का मौका नहीं मिलता, इसलिए मैंने उनसे कहा कि वे इसका पूरा आनंद लें।

विमेंस वर्ल्ड कप : भारत की लगातार तीसरी हार

इंग्लैंड ने 4 रन से हराकर सेमीफाइनल में एंट्री

इंदौर, 19 अक्टूबर। हीथर नाईट (109) के शानदार शतक के बाद आखिरी ओवरों में गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर इंग्लैंड की महिला टीम ने रविवार को महिला विश्वकप के रोमांचक मुकाबले में भारतीय टीम को चार रनों से हरा टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बना ली।

289 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने तीसरे ही ओवर में प्रतिका रावल (छह) का विकेट गंवा दिया। 10वें ओवर में हरलीन देओल भी (24) रन बनाकर पवेलियन लौट गई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी कप्तान हरमनप्रीत कौर ने स्मृति मंधाना के साथ तीसरे विकेट के लिए 125 रनों की साझेदारी की।

31वें ओवर में हरमनप्रीत कौर के आउट होने से भारत को तीसरा झटका लगा। हरमनप्रीत कौर ने 70 गेंदों में 10 चौके लगाते हुए 70 रन बनाये। टीम को जीत की ओर ले जा रही स्मृति मंधाना को लिंसी स्मिथ ने आउट किया। मंधाना ने 94 गेंदों में आठ चौके लगाते हुए 88 रनों की पारी खेली। 47वें ओवर में सोफी एकल्सटन ने दीप्ति शर्मा को आउटकर मैच को रोमांचक बना दिया।दीप्ति शर्मा ने 57 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 50 रन बनाये। स्मिथ ने मांधना का विकेट निकालकर इंग्लैंड को वापसी की राह दिखाई। दीप्ति ने शानदार पारी खेली लेकिन एकल्सटन के आखिरी ओवर में अपना विकेट गंवा बैठी। लॉरेन बेल ने 49वें ओवर की पहली गेंद पर चौका खाने के बाद भी केवल नौ रन दिए। ये मैच भारत ने एकदम अपनी नाक के नीचे से निकलने दिया है। भारतीय टीम निर्धारित 50 ओवरों में छह विकेट पर 284 रन ही बना सकी और चार रनों से मुकाबला हार गई।

तन्वी फाइनल में हारी, जीता ऐतिहासिक रजत

गुवाहाटी, 19 अक्टूबर। भारत की तन्वी शर्मा का बीडब्ल्यूएफ विश्व जूनियर चैंपियनशिप 2025 में शानदार प्रदर्शन रजत पदक के साथ समाप्त हुआ, क्योंकि 16 वर्षीय तन्वी शर्मा का जोशपूर्ण प्रयास रविवार को यहां नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में लड़कियों के एकल फाइनल में थाईलैंड की अन्यापत फिचितप्रीचासाक को हराने के लिए पर्याप्त नहीं था। फाइनल में, तन्वी को अन्यापत के खिलाफ 7-15, 12-15 से हार का सामना करना पड़ा और घरेलू मैदान पर भारत का अभियान एक व्यक्तिगत रजत और एक टीम कांस्य पदक के साथ समाप्त हुआ। तन्वी इस प्रतियोगिता में रजत पदक जीतने वाली पांचवीं भारतीय हैं, इससे पहले अपर्णा पोपट (1996), साइना नेहवाल (2006), सिरिल वर्मा (2015) और शंकर मुथुस्वामी (2022) ने यह उपलब्धि हासिल की थी। लड़कों के एकल वर्ग के फाइनल में, चीन के लियू यांग मिंग यू ने इस साल की शुरुआत में एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में मिली हार का बदला लेते हुए शीर्ष वरीयता प्राप्त इंडोनेशिया के मोहम्मद जकी उबैदिल्लाह को 15-10, 15-11 से हराकर खिताब अपने नाम किया। तन्वी शुरुआती गेम में अपनी लय हासिल करने के लिए संघर्ष करती दिखीं क्योंकि उन्होंने जल्दी-जल्दी अंक हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कई गलतियां कर बैठीं। अन्यापत की फ्लैट पुश और फ्लिक टॉस को जल्दी समझने की क्षमता भी भारतीय खिलाड़ी के लिए मददगार साबित नहीं हुई और थाई खिलाड़ी ने 5-6 से लगातार सात अंक हासिल कर अच्छी बढ़त बना ली और फिर केवल नौ मिनट में गेम अपने नाम कर लिया।

राजधानी

हेरिटेज निगम आयुक्त ने किया सफाई व्यवस्था का निरीक्षण

हेरिटेज निगम को 37 जोन में बांटकर की जाएगी सफाई

जयपुर। दीवाली पर शहरवासियों के लिए हेरिटेज निगम की ओर से विशेष सफाई व्यवस्था की गई है। इसके लिए पूरे हेरिटेज क्षेत्र को 37 भागो में बांटकर बीट के हिसाब से सफाईकर्मी लगाए है। इन 37 भागों में 78 सफाई कर्मचारी सफाई व्यवस्था को देखेंगे। वहीं, सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने क्षेत्र में दौरा किया।

आयुक्त डॉ निधि पटेल ने तीन घंटे तक परकोटे के विभिन्न स्थानों, सिविल लाइन जोन, आदर्श नगर जोन इलाके में सफाई व्यवस्था देखी। इस दौरान निगम आयुक्त ने ब्रह्मपुरी, आमेर रोड, रामगढ़ मोड़, चांदी की टकसाल, बड़ी चौपड़, छोटी चौपड़, चांदपोल,त्रिपोलिया बाजार, खजाने वालों का रास्ता, नेहरू बाजार, गणगौरी बाजार, शास्त्री नगर, बनीपार्क में निरीक्षण किया। आयुक्त ने बताया कि निगम की पूरी टीम त्योहारी सीजन में भी अलर्ट रहेगी। गैराज शाखा की ओर से अतिरिक्त यूनिट लगाई गया है। सड़क पर कचरा दिखने पर तुरंत सफाई करेंगी। आयुक्त ने सभी लोगों से शहर को साफ सुथरा रखने और कचरा निगम के हूपर में ही डालने के लिए अपील की है। निगम आयुक्त ने शहर मंदिरों में भी सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। उन्होंने गढ़ गणेश जी मंदिर, नहर के गणेश जी, राम मंदिर, चांदी की टकसाल काले हनुमान जी, रामचंद्र जी मंदिर, गलता गेट पर भी सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। इस दौरान निगम आयुक्त ने सभी मंदिरों के बाहर सफाई रखने और रंगोली बनाने के निर्देश दिए। आयुक्त ने बताया कि दीपावली पर बाजारों में भीड़ उमड़ रही है। ऐसे में सफाई व्यवस्था सुदृढ़ रहें। इसके लिए 37 जोन बनाकर सफाई की जाएगी। इसके लिए बीट के हिसाब से सफाई कर्मियों को जिम्मेदारी दी गई है। वहीं, निगम की गैराज शाखा की ओर से भी अतिरिक्त यूनिट लगाई गई है, जो कि परकोटे गश्त लगाकर कर ओपन डिपो को खत्म करेंगी।

- **परकोटे इलाके में सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए लगाए अतिरिक्त हूपर, आयुक्त का निर्देश 24 घंटे फील्ड में तैनात रहें कर्मचारी**

हेरिटेज निगम आयुक्त ने शहर में घूमकर सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री निवास पर दीपावली मिलन कार्यक्रम

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दीपावली महोत्सव के अवसर पर आमजन को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनकी खुशहाली और समृद्धि की कामना की है। शर्मा रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर दीपावली मिलन कार्यक्रम के अन्तर्गत आमजन से मुलाकात कर रहे थे।इस अवसर पर शर्मा ने आमजन से दीपावली महोत्सव के दौरान स्थानीय उत्पादों की खरीद को प्राथमिकता देने का आ ान किया। उन्होंने कहा कि इससे वोकल फॉर लोकल को प्रोत्साहन मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था को अधिक गति मिलेगी।शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीएसटी दरों में कमी कर रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं में राहत पहुंचाई है। इससे आमजन, मध्यम वर्ग, किसान, छोटे व्यापारी सहित सभी वर्गों को बड़ी राहत मिल रही है।

राज्यपाल बागडे ने दीप पर्व की शुभकामनाएं दी

जयपुर। राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने दीपावली, गोवर्धन पूजा व भैया दूज की बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।राज्यपाल बागडे ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि यह पर्व अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। दीपकों के उजास में ही जीवन की उत्सवधर्मिता समाई है। उन्होंने मां लक्ष्मी से सभी के लिए कामना की है कि रोशनी का यह त्योंहार हम सभी के जीवन में नई खुशियां लेकर आए ।

'नव विधान: न्याय की नई पहचान' प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

नवीन आपराधिक कानून के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राजस्थान पुलिस द्वारा आयोजित 'नव विधान: न्याय की नई पहचान' प्रदर्शनी आयोजित हुई।

जयपुर। नवीन आपराधिक कानून के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राजस्थान पुलिस द्वारा आयोजित 'नव विधान: न्याय की नई पहचान' प्रदर्शनी का मंगलवार को अंतिम दिन होगा। सीतापुरा स्थित जेईसीसी परिसर में चल रही इस हाई-टेक प्रदर्शनी ने बीते एक हफ्ते में हजारों आगंतुकों को आकर्षित किया है।

रविवार को अवकाश के बावजूद बड़ी संख्या में लोगों ने प्रदर्शनी का लुत्फ उठाया। इस दौरान पुलिस विभाग के कई शीर्ष अधिकारियों ने अपने परिजनों के साथ प्रदर्शनी का अवलोकन किया और इसका मान बढ़ाया। पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने सपरिवार प्रदर्शनी का गहराई से मुआयना किया और विभिन्न ज़ोन में चल रहे डेमो तथा तकनीक-आधारित प्रस्तुतियों में गहरी रुचि दिखाई। उनके साथ पूर्व डीजीपी उमेश मिश्रा और ओमप्रकाश गल्होत्रा तथा अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पुलिस एवं आरपीए डायरेक्टर एस.सेंगाथिर भी मौजूद रहे। जिन्होंने नवीन न्याय व्यवस्था के नए दौर की झलक देखी और राजस्थान पुलिस के प्रयासों की सराहना की।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पुलिस एवं आरपीए डायरेक्टर एस.सेंगाथिर ने बताया कि रविवार को अवकाश के बावजूद बड़ी संख्या में लोगों ने प्रदर्शनी का लुत्फ उठाया। बच्चों, युवाओं और परिवारों के साथ-साथ विद्यार्थियों ने नए आपराधिक कानूनों को समझने और पुलिस की आधुनिक कार्यशैली को करीब से देखने में गहरी रुचि दिखाई।

सेंगाथिर ने बताया कि 13 अक्टूबर को केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा उद्घाटित यह प्रदर्शनी,भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में आए नवीन कानूनों के क्रांतिकारी बदलावों को आमजन तक पहुंचाने का माध्यम बनी है।

राजस्थान पुलिस महानिदेशक राजीव शर्मा ने आमजन से आव्हान किया है कि जो अब तक नहीं पहुँचे हैं, वे इस अंतिम दिन प्रदर्शनी का हिस्सा ज़रूर बनें, क्योंकि यह केवल कानून देखने का नहीं, बल्कि न्याय के नए भारत को समझने का मौका है। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी का उद्देश्य नागरिकों को यह दिखाना है कि नया कानून सिर्फ दंड नहीं, बल्कि न्याय, संवेदना और सुरक्षा की नई सोच लेकर आया है। प्रदर्शनी स्थल को 10 थीम आधारित जोन में विभाजित किया गया है, जहाँ तकनीक और शिक्षा का सुंदर मेल दिखाई देता है। एक छात्र ने कहा - यह पहली बार है जब हमें कानून को इतने आसान और मजेदार रूप में समझने का मौका मिला। वहीं एक वरिष्ठ नागरिक का कहना था - पुलिस की छवि बदल रही है, और यह प्रदर्शनी उसका जीवंत उदाहरण है।

राज्यपाल से मिले भाजपा प्रवक्ता नरेंद्र कटारा

जयपुर। भाजपा के प्रदेश प्रवक्तानरेंद्र कटाराने दीपावली के पावन पर्व परराज्यपाल हरिभाऊ बागड़ेसे राजभवन में शिष्टाचार भेंट कर उन्हें दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर कटारा ने महामहिम राज्यपाल से सौहार्दपूर्ण वार्ता की तथाराज्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उनके नवाचारों, दूरदर्शी दृष्टिकोण और मार्गदर्शनकी सराहना करते हुए उन्हें प्रेरणास्त्रोत बताया। राजभवन में हुई इस भेंट के दौरान भाजपा मीडिया विभाग केजीतमल पंचारियातथा युवा कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

भाजपा जयपुर शहर ने घुमंतू बस्ती में बांटी खुशियाँ

जयपुर। भाजपा जयपुर शहर ने दीपावली के पावन पर्व को एक नई दिशा देते हुए जयसिंहपुरा खोर स्थित कच्ची बस्ती में घुमंतू जाति के सैकड़ों परिवारों के साथ खुशियां साझा कीं। इस अवसर पर राशन किट, पूजन सामठी, दीपक और मिठाइयों का वितरण किया गया। जयपुर शहर भाजपा जिला अध्यक्ष अमित गोयल ने बताया कि यह सेवा कार्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस संदेश से प्रेरित है जिसमें उन्होंने कहा है किशोषित, पीड़ित, दलित और वंचित वर्ग को सशक्त बनाने से ही देश सशक्त बनेगा।इसी संकल्प के साथ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सेवा पहुंचाने का प्रयास किया गया। गोयल ने आगे बताया कि 16 अक्टूबर को भाजपा जयपुर शहर द्वारा केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव की उपस्थिति में 'आत्मनिर्भर भारत रोजगार उत्सव' का आयोजन कर 54 परिवारों को स्वरोजगार से जोड़ा गया था, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। अभियान की संयोजक रेखा राठौड़ ने जानकारी दी कि पार्टी आने वाले समय में सामाजिक सेवा कार्यों में भी अठाणी भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा किसेवा, समर्पण से समाज उत्थानकी भावना को जन-आंदोलन का रूप देने का संकल्प भाजपा कार्यकर्ताओं ने लिया है।

अवैध हथियार सहित एक बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। शिवदासपुरा थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) जयपुर दक्षिण ने ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन (आग) के तहत कार्रवाई करते हुए एक बदमाश को पकड़ा है और उसके पास से एक पिस्टल जब्तकी है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।इस अवसर पर पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) राजर्षि राज ने बताया कि शिवदासपुरा थाना पुलिस और डीएसटी दक्षिण ने पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन (आग) के तहत कार्रवाई करते हुए 25 वर्षीय धनराज गुर्जर उर्फ डीके निवासी सांगानेर को गिरफ्तार किया।

एक दीया सद्भाव कार्यक्रम आयोजित

जयपुर। दीपावली की पूर्व संध्या पर शहीद स्मारक, एम.आई. रोड पर साम्प्रदायिक सौहार्द पसंद संगठनों की ओर से एक दीया सद्भाव का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शहर के विभिन्न समुदायों के नागरिकों ने दीप जलाकर अमन, एकता और सद्भाव की लौ जगाई। कार्यक्रम समन्वयक बसंत हरियाणा ने बताया कि लोगों ने दीप जलाकर संदेश दिया कि दीपावली केवल रोशनी का त्योहार नहीं, बल्कि दिलों के अंधेरे को मिटाने और समाज में प्रेम, भाईचारे को मजबूत करने का अवसर है।

अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। झोटवाड़ा थाना पुलिस क सीएसटी टीम ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत ड्रग्स माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ 20 ग्राम स्मैक सहित आरोपी संजय कुमार वर्मा को गिरफ्तार किया है। क्राइम ब्रांच गिरफ्तार आरोपी से गिरोह के अन्य लोगों के बारे में गहनता से पूछताछ करने में जुटी है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) अभिजीत सिंह ने बताया कि शहर में चल रहे अवैध मादक पदार्थ तस्करी को रोकने के लिए ऑपरेशन क्लीन स्वीप चलाया गया। जिसमें विशेष टीम सीएसटी का गठन किया गया। टीम ने मुखबिर व तकनीकी सहायता के आधार पर झोटवाड़ा पश्चिम इलाके में कार्रवाई करते हुए मादक पदार्थ तस्कर संजय कुमार वर्मा पुत्र काना राम वर्मा को 20 ग्राम स्मैक के साथ एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस पूछताछ में सामने आरोपी ने बताया कि वो स्मैक अखलेरा कोटा से एक महिला से खरीद कर लया था और दादी का फाटक इलाके में एक-एक ग्राम की पूडिया बनाकर ठाहकों को बेचता था।

मुख्यमंत्री ने सपरिवार स्ट्रीट वैंडर्स से दीपावली की खरीददारी की

उन्होंने मानसरोवर के बड़ा बाजार में दिये, पूजन सामग्री, फल आदि खरीदे

जयपुर, 19 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दीपावली की पूर्व संध्या पर स्थानीय दुकानदारों व स्ट्रीट वेंडर्स से खरीदारी कर वोकल फॉर लोकल का संदेश दिया। मुख्यमंत्री ने रविवार को सपरिवार मानसरोवर के किरण पथ स्थित बड़ा बाजार में दीपावली की खरीददारी की और मिट्टी के दीये, पूजन सामग्री, रंगोली, बंदनवार एवं फल आदि खरीदे।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस दौरान स्थानीय दुकानदारों व स्ट्रीट वैंडर्स से आत्मीयतापूर्वक बातचीत की तथा यूपीआई के माध्यम से भुगतान किया।**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को मानसरोवर के किरण पथ स्थित बड़ा बाजार में स्थानीय दुकानदारों व स्ट्रीट वेंडर्स से दीपावली की खरीददारी की।

शर्मा ने प्रदेशवासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने जीएसटी की दरों में भारी कमी की है, जिससे दैनिक उपयोग की वस्तुएं सस्ती हुई हैं। त्योहार पर बचत होने से आमजन में खरीदारी को लेकर काफी उमंग और उत्साह नजर आ रहा है।

उन्होंने कहा कि हमें वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देते हुए स्थानीय दुकानदारों और स्ट्रीट वेंडर्स से अधिक से अधिक खरीदारी करनी चाहिए, जिससे उनके घरों में खुशहाली बढ़े। मुख्यमंत्री ने इस दौरान दुकानदारों व स्ट्रीट वेंडर्स से आत्मीयतापूर्वक बातचीत की तथा यूपीआई के माध्यम से भुगतान कर डिजिटल इंडिया को भी प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर स्थानीय व्यापार संगठनों एवं आमजन ने मुख्यमंत्री का स्वागत-अभिनन्दन किया।

पाकिस्तान व अफगानिस्तान में संघर्ष विराम पर सहमति

दोहा,19 अक्टूबर। कतर की राजधानी दोहा में आयोजित वार्ता में पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान तत्काल संघर्ष विराम पर सहमत हो गये हैं।

कतर के विदेश मंत्रालय ने रविवार को जारी एक बयान में कहा कि कतर और तुर्की की मध्यस्थता में हुयी इस वार्ता के नतीजे अच्छे रहे और दोनों पक्ष स्थायी शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के मकसद से एक प्रणाली बनाने पर राजी हो गये। बयान में आगे कहा गया है कि दोनों पक्ष आने वाले दिनों में संघर्षविराम के प्रावधानों को भरोसेमंद तरीके से क्रियान्वित करने के लिए बैठकें करने पर भी राजी हो गये। इससे दोनों देशों में सुरक्षा और स्थिरता का माहौल कायम होगा। कतर के विदेश मंत्रालय ने उम्मीद जाहिर करते हुए कहा कि यह कदम पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के बीच सरहद पर तनाव को कम करने और इलाके में अमन की मज़बूत बुनियाद रखने में मददगार साबित होगा।

जेईई मेन की परीक्षा 21 से 30 जनवरी के बीच होगी

एनटीए ने घोषणा की है कि परीक्षा के लिए पंजीकरण प्रक्रिया अक्टूबर में कशुरु हो जायेगी

नई दिल्ली, 19 अक्टूबर। राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने जेईई मेन 2026 परीक्षा की तिथियां घोषित कर दी हैं। यह परीक्षा जनवरी और अप्रैल दोनों सत्रों में आयोजित की जाएगी। एनटीए के अनुसार, सत्र 1 की परीक्षा 21 से 30 जनवरी 2026 के बीच होगी और इसके लिए पंजीकरण प्रक्रिया अक्तूबर, 2025 से ही आधिकारिक वेबसाइट पर शुरू होगी।

- **जेईई मेन 2026 परीक्षा, जनवरी व अप्रैल में 2 सत्रों में आयोजित होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाई जा रही है, ताकि उम्मीदवार को ज्यादा दूर न जाना पड़े।**

राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने जेईई (मेन) 2026 में अधिक उम्मीदवारों को शामिल करने के लिए कई कदम उठाए हैं। इसके तहत परीक्षा केंद्रों की संख्या बढ़ाई जा रही है ताकि उम्मीदवारों को ज्यादा दूर न जाना पड़े। साथ ही, दिव्यांग उम्मीदवारों की विशेष जरूरतों का भी ध्यान रखा जा रहा है, ताकि सभी आसानी से परीक्षा दे सकें।

एनटीए, आधार प्रमाणीकरण के जरिए यूआईडीएआई से उम्मीदवार का नाम, जन्मतिथि, लिंग, फोटो और पता प्राप्त करेगा। आधार में कोई बदलाव कराने के लिए उम्मीदवार को यूआईडीएआई के दिशा निर्देशों का पालन करना होगा। लेकिन, पिता/माता/अभिभावक का नाम आदि आधार में दर्ज नहीं होते, इसलिए उम्मीदवारों को यह जानकारी ऑनलाइन आवेदन पत्र में अलग से भरनी होगी। यदि किसी उम्मीदवार का नाम आधार कार्ड और 10वीं के शैक्षिक प्रमाण पत्र/मार्कशीट में मेल नहीं खाता है, तो आवेदन भरते समय इसे ठीक करने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।

पेरिस के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सबसे प्रसिद्ध म्यूजियमों में से एक है। यहाँ हर साल लाखों की संख्या में दर्शक आते हैं। विश्व प्रसिद्ध मोनालिसा की पेंटिंग भी इसी संग्रहालय में रखी हुयी है।

जन सुराज के प्रदेश प्रवक्ता व संस्थापक सदस्य भाजपा में शामिल

पटना, 19 अक्टूबर। जन सुराज के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. अमित कुमार पासवान, मानस भूमि विद्यालय सीनियर सेकेंडरी स्कूल की निदेशक और पूर्व जिला पार्षद अनिता कुमारी और जन सुराज के संस्थापक सदस्य कर्मवीर कुशवाहा आज अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हुए। प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने भाजपा मीडिया सेंटर में आयोजित एक मिलन समारोह में सभी नए सदस्यों का पार्टी में स्वागत किया और कहा कि महागठबंधन सत्ता की दुकानदारी चाहता है जबकि राजग विकसित बिहार का सपना पूरा करना चाहता है। उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव में मतदाताओं के रुझान को देखते हुए जननायक लोक दल पार्टी ने भी राजग को समर्थन देने की घोषणा की है।

लद्दाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के भीतर अधिकतर पाबंदियां हटा ली गईं थीं। इस मामले में अब लद्दाख के प्रतिनिधि 22 अक्टूबर को राजधानी दिल्ली में गृह मंत्रालय के साथ बातचीत करेंगे।

गाज़ा पट्टी पर इज़रायल के हवाई हमले

इज़रायल ने हमास पर शांति समझौते के उल्लंघन का आरोप लगाया

तेल अवीव, 19 अक्टूबर। अमेरिकी मध्यस्थता में इज़रायल व हमास के बीच हुआ शांति समझौता खतरे में पड़ता दिखाई दे रहा है। फिलिस्तीनियों ने इज़रायली सेना पर रविवार को गाज़ा पर हमले करने का आरोप लगाया। इसमें दो लोग मारे गए। दूसरी तरफ, इज़रायल ने हमास पर शांति समझौते के उल्लंघन का आरोप लगाया है।

गाज़ा में रहने वाले फिलिस्तीनियों ने बताया कि उन्होंने दक्षिण में स्थित राफा में धमाकों व गोलीबारी की आवाज सुनी। दूसरी तरफ, खान यूनिस के करीब अबसान शहर में इज़रायली टैंकों की भीषण गोलाबारी की आवाज सुनी गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने दोपहर में हवाई हमलों की लहरें देखीं। इस मामले में इज़रायली सेना ने फिलहाल कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। उधर, गाज़ा के स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने पूर्वी जबालिया में इज़रायली हमलों में दो लोगों के मारे जाने की पुष्टि की।

- **इज़रायल और हमास के बीच आरोप-प्रत्यारोप के बाद शांति समझौता खतरे में पड़ता नज़र आ रहा है।**

द टाइम्स ऑफ इज़रायल ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि इज़रायली सेना सुरक्षा बलों पर आतंकी हमलों के बाद राफा में हवाई हमले कर रही है। हालांकि, उसने अपनी रिपोर्ट में सूचना के स्रोत का खुलासा नहीं किया। एक इज़रायली सैन्य अधिकारी ने रविवार को कहा कि हमास ने सुरक्षा बलों पर कई बार हमले किए हैं। इनमें रॉकेट से किए जाने वाले और स्नाइपर हमले शामिल हैं। उधर, हमास के वरिष्ठ अधिकारी इज्जत अली रिशीक ने कहा कि उनका समूह संघर्ष विराम के प्रति प्रतिबद्ध है, जबकि इज़रायल लगातार शर्तों का उल्लंघन कर रहा है।

फिलिस्तीनी अधिकारियों के हवाले से अल जजीरा ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि महीने की शुरुआत में संघर्षविराम लागू होने के बाद से इज़रायल ने 47 बार इसका उल्लंघन किया है। इज़रायली हमलों में 38 लोग मारे गए हैं और 143 घायल हुए हैं।

इज़रायल ने शनिवार को कहा कि गाज़ा व मिस्र के बीच राफा सीमा अगले आदेश तक बंद रहेगी। इससे पहले मिस्र में फिलिस्तीनी दूतावास ने कहा था कि गाज़ा लौटने वाले लोगों के लिए सोमवार को फिर से इसे खोल दिया जाएगा। इज़रायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि राफा को फिर से खोलना इस बात पर निर्भर करेगा कि हमास सभी मृत 28 बंधकों के अवशेष लौटाने की युद्धिवराम की शर्त को कैसे पूरा करता है।

भारत में छोटे, पोर्टेबल न्यूक्लियर रिएक्टर बनेंगे

सुरक्षा मानकों में मजबूत रिएक्टर जहाजों पर या अलग-अलग इंडस्ट्री में लग सकेंगे

नई दिल्ली, 19 अक्टूबर। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों और आधुनिक तकनीक के लिहाज से एक बड़ा कदम आगे बढ़ा रहा है। देश में छोटे, पोर्टेबल न्यूक्लियर रिएक्टर डेवलप किए जा रहे हैं, जिनमें सबसे बड़ी खासियत यह है कि इन्हें जहाजों पर या अलग-अलग इंडस्ट्री में लगाया जा सकेगा। भारतीय परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) के साइन्टिस्ट इस काम में जोरशोर से लगे हुए हैं। पहले दो रिएक्टर पर फोकस है, जिनमें एक की क्षमता 55 मेगावाट और दूसरे की 200 मेगावाट होगी।

इसका मतलब साफ है कि अब बिजली सिर्फ जमीन पर ही नहीं, बल्कि समुद्र में भी पैदा की जा सकेगी। 200 मेगावाट वाला रिएक्टर इतना पावरफुल है कि किसी बड़ी इंडस्ट्री, जैसे सीमेंट मिल या बिजली-खपत वाले यूनिट्स को भी चला सकता है। अधिकारी ने यह भी कहा कि ये रिएक्टर सुरक्षा मानकों के लिहाज से बहुत मजबूत हैं और इन्हें कॉमर्शियल जहाजों में भी लगाया जा सकता है।

अफसरों ने न्यूक्लियर सबमरीन में इसके इस्तेमाल पर सीधे तौर पर कुछ नहीं कहा। भारत के पास फिलहाल दो होम-बिल्ट न्यूक्लियर सबमरीन हैं- आईएनएस अरिहंत और आईएनएस अरिघात, जो 83 मेगावाट के रिएक्टर से चलती हैं। तीसरी न्यूक्लियर सबमरीन आईएनएस अरिधमन ट्रायल में है। अगर 200 मेगावाट वाले छोटे रिएक्टर को इस्तेमाल में लाया गया, तो यह नौसेना और वाणिज्यिक जहाज दोनों के लिए गेम चेंजर साबित हो सकता है।

- **अगर योजना के अनुरुप 200 मेगावाट वाले छोटे रिएक्टर को इस्तेमाल में लाया गया, तो यह नौ सेना और वाणिज्यिक जहाजों के लिए गेम चैंजर साबित होगा।**

सरकार ने यह भी घोषणा की है कि एटॉमिक एनर्जी एक्ट, 1962 में बदलाव करके निजी कंपनियों को सिविल न्यूक्लियर सेक्टर में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। इसका मतलब है कि अब सिर्फ सरकारी विभाग ही नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र भी न्यूक्लियर पावर प्लांट चला सकेगा और न्यूक्लियर फ्यूल के शुरुआती हिस्से को संभाल सकेगा।

साथ ही निजी कंपनियों को विदेशी देशों से फ्यूल खरीदने की भी अनुमति दी जा सकती है, साथ ही खर्चा हुआ फ्यूल वापस उसके देश को भेजने की व्यवस्था भी की जा सकती है। इसके साथ ही सिविल लाइबिलिटी फॉर न्यूक्लियर डैमेज एक्ट में भी बदलाव किए जा रहे हैं, ताकि न्यूक्लियर उपकरण सप्लायर की जिम्मेदारी केवल कॉन्ट्रैक्ट में तय सीमा तक रहे। नए बदलाव में 'सप्लायर' को क्रिटिकल उपकरण प्रदान करने वाले के रूप में परिभाषित किया गया है।

ट्रंप के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में लाखों अमेरिकी सड़क पर उतरे

न्यूयॉर्क/सैन फ्रांसिस्को, 19 अक्टूबर। अमेरिका में शनिवार को 2,700 शहरों और कस्बों में लाखों लोग राष्ट्रव्यापी नो किंग्स विरोध प्रदर्शनों में सड़कों पर उतर आये। यह अमेरिकी इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा एकदिवसीय विरोध प्रदर्शन था।

उल्लेखनीय है कि नो किंग्स आंदोलन का यह दूसरा प्रदर्शन था। इससे पहले इसी साल 14 जून को राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के जन्म दिन पर पहले प्रदर्शन का आयोजन हुआ था, जिसमें पचासों राज्यों से हजारों लोगों ने भाग लिया था। प्रदर्शनकारी ट्रंप के तानाशाही रवैये के खिलाफ सड़कों पर उतर आए। उनका कहना है कि ट्रंप एक लोकतंत्र में राजा की तरह व्यवहार कर रहे हैं, जो असंवैधानिक है।

न्यूयॉर्क शहर में 1,00,000 से ज़्यादा प्रदर्शनकारी टाइम्स स्क्वायर पर जमा हुए थे, जिनके हाथों में, "नफ़रत अमेरिका को महान नहीं बनाएगी, अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन (आईसीई) को न्यूयॉर्क शहर से बाहर करो, हमारे संविधान की रक्षा करो, लोकतंत्र, राजतंत्र नहीं और संविधान वैकल्पिक नहीं है" जैसे पोस्टर थे।

एक प्रदर्शनकारी टोनी चार्ली ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवास एक परंपरा है और प्रवासी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। "आईसीई अपराधियों के पीछे नहीं पड़ रही, बल्कि उन निर्दोष लोगों के पीछे पड़ रही है जो मेहनती हैं और इस देश में योगदान दे रहे हैं।"

सैन फ्रांसिस्को में प्रशासन की इमिग्रेशन (आव्रजन) कार्रवाई और हाल ही में कई अमेरिकी शहरों में नेशनल गार्ड की टुकड़ियों की तैनाती के विरोध में लगभग 50,000 लोग सड़कों पर उतर आये थे।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908